₹ 10

www.kewalsachtimes.com

फरवरी 2023

KEWAL SACH TIMES

A National Magazine

RNI NO.-BIHBIL/2011/49252, DAVP NO.-131729, POSTAL REG. NO.:-PT.-78

अर्जी की चमत्कारी पर्ची

विवादों में धीरेन्द्र शास्त्री!

जन-जन की आवाज है केवल सच

आत्म-निर्भर बनने वाले युवाओं को सपोर्ट करें

आपका छोटा सहयोग, हमें मजबूती प्रदान करेगा

www.kewalsach.com

www.kewalsachlive.in

-: सम्पर्क करें :-

पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14, मकान संख्या-28/14,
कंकड़बाग, पटना (बिहार)-800020, मो०:-9431073769, 9308815605

जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ

जैकी श्रॉफ
01 फरवरी 1960

मनोज तिवारी
01 फरवरी 1971

ब्रह्मनंदम
01 फरवरी 1956

खुशवंत सिंह
02 फरवरी 1915

शमीता शेट्टी
02 फरवरी 1979

रघुराम राजन
03 फरवरी 1963

उर्मिला मांदोडकर
04 फरवरी 1974

अभिषेक बच्चन
05 फरवरी 1976

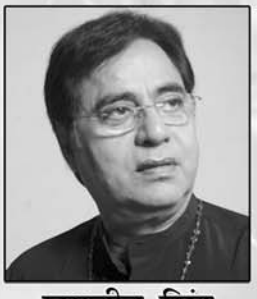

जगजीत सिंह
08 फरवरी 1941

मो० अजहरूद्दीन
08 फरवरी 1963

राहुल रॉय
09 फरवरी 1968

उदिता गोस्वामी
09 फरवरी 1984

कुमार विश्वास
10 फरवरी 1970

चौधरी अजीत सिंह
12 फरवरी 1939

स्व० सुषमा स्वराज
14 फरवरी 1952

टेकलाल महतो
15 फरवरी 1945

रणधीर कपूर
15 फरवरी 1947

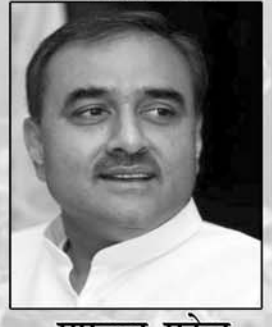

प्रफुल्ल पटेल
17 फरवरी 1957

स्व० जयललिता जयराम
24 फरवरी 1948

शाहीद कपूर
25 फरवरी 1981

KEWAL SACH TIMES

A National Magazine

Regd. Office :-
East Ashok, Nagar, House No.-28/14, Road No.-14, kankarbagh, Patna- 8000 20 (Bihar) Mob.-09431073769,
E-mail :- kewalsach@gmail.com

Corporate Office:-
Riya Plaza, Flat No.-303, Kokar Chowk, Ranchi-834001 (Jharkhand)
Mob.- 09955077308,
E-mail:- editor.kstimes@rediffmail.com

Delhi Office :-
Sanjay Kumar Sinha
A-68, 1st Floor, Nageshwar talla, Shastri Nagar, New Delhi-110052
Mob.- 09868700991, 09955077308
kewalsach_times@rediffmail.com

Kolkata Office :-
Ajeet Kumar Dube,
131 Chitranjan Avenue, Near- md. Ali Park, Kolkata- 700073 (West Bengal)
Mob.- 09433567880, 09339740757

ADVERTISEMENT RATES PER ISSUE

	AREA	FULL PAGE	HALF PAGE
COLOUR	Cover Page	3,00,000/-	N/A
	Back Page	1,00,000/-	65,000/-
	Back Inside	90,000/-	50,000/-
	Back Inner	80,000/-	50,000/-
	Middle	1,40,000/-	N/A
	Front Inside	90,000/-	50,000/-
	Front Inner	80,000/-	50,000/-

	AREA	FULL PAGE	HALF PAGE
B & W	Inner Page	60,000/-	40,000/-

1. एक साल के नियमित विज्ञापन पर पत्रिका के वेवसाइट **www.kewalsachtimes.com** के फ्रंट पर भी विज्ञापन निःशुल्क तथा आपका वेवसाइट से सीधा लिंक हो सकता है।
2. एक साल के नियमित विज्ञापन पर 10 प्रतिशत की रियायत।
3. आपके प्रोडक्ट या संगठन के प्रचार-प्रसार हेतु आलेख को उचित स्थान।
4. पत्रिका द्वारा सामाजिक कार्य में आपके संगठन/प्रोडक्ट का बैनर/फ्लैक्स को उचित स्थान देकर आपके संगठन का व्यापक प्रचार-प्रसार।
5. विज्ञापन का भुगतान चेक या आर.टी.जी.एस. से ही मान्य होगा।

महाप्रबंधक (विज्ञापन)

कंपनी-डॉक्टर-सरकार और कीमत

अपनी प्रतिक्रिया हमारे ई-मेल पर दें:- editor.kstimes@rediffmail.com

देश की बढ़ती आबादी एक विस्फोट की भूमिका में है और उसके फूटने का डर सभी को है और उसी प्रकार की तबाही दवा कंपनी की दवाओं की बढ़ती कीमत की वजह से है। देश में आबादी के साथ-साथ बीमारी भी बढ़ती जा रही है और इसी का लाभ दवा कंपनी बड़ी चतुराई के साथ डॉक्टर के साथ मिलीभगत करके सरकार को भी राजस्व का चुना लगाने की कोशिश लगातार जारी है। पेट्रोल एव डीजल के बढ़ते दाम ने आवाम का जीना हराम कर रखा है वैसे में कोरोना काल में हुई आर्थिक संकट के बीच 1 अप्रैल 2022 से आवश्यक लगभग 800 दवाएं लगभग 11 प्रतिशत बढ़ जायेगी। NPPA ने इसकी मंजूरी भी दे दी है। देश में लगभग 1.6 लाख करोड़ रूपये का दवा का बाजार है वैसे में आम आदमी की सेहत का क्या हाल होगा यह सोचकर कोरोना वायरस से भी ज्यादा डर लगता है दवाओं से पड़ते बोझ का और कोरोना काल में डोलो 650MG का खेल से भी अब रहस्य उठने लगा है कि किस प्रकार दवा कंपनी अपने प्रोडक्ट को बेचने के लिए किस प्रकार का गुल खिला रही है और इससे सरकार एवं जनता के सेहत पर कितना प्रभाव पड़ रहा है समझा जा सकता है। दवा कंपनी के साथ-साथ सरकारी नीतियों में अस्पष्टता के कारण दाम बढ़ते हैं और कई गंभीर बीमारी का ईलाज के लिए दवा बनाने वाली कंपनियां 50 प्रतिशत तक का दाम बढ़ा देती हैं। प्रचार तंत्र में होने वाले खर्च को बीमार के परिजनों से वसूला जाता है और सरकार इसपर गंभीर नहीं दिखती की कैसे इस काले व्यापार पर प्रतिबंध लगे।

अजीत सिंह

बीमार को दूसरा जीवन देने वाले डॉक्टर और हॉस्पिटल में गीता का उपदेश को बड़े बड़े अक्षरों में लिखते हैं लेकिन पैसे के लालच में गीता का संदेश सिर्फ मरीजों के परिजनों पर ही लागू होता है। 100 रुपए इंजेक्शन 2000 में मरीज को दिया जाता है और इसकी भनक तब लगती है जब मरीज के परिजन को बिल का भुगतान करना होता है। अब तो एक ही छत के नीचे दवा, पैथो जांच, एम आर आई, सिटी स्कैन के नाम पर मरीजों को आर्थिक रूप से बीमार बना दिया जाता है। वेंटीलेटर पर मर चुके मरीजों का भी इलाज होता है तथा परिजन से उसके नाम पर मोटी रकम वसूली जाती है की हजारों खबरे सार्वजनिक हो चुकी हैं। सरकार दवा माफियाओं के ऊपर अंकुश लगाने एवं मरीजों को कम कीमत पर दवा की उपलब्धता के लिए जन औषधि केंद्र खोलकर सुविधा पहुंचा रहे हैं। एक ही बीमारी की सैकड़ों दवाइयां और इंजेक्शन मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध है और हजारों कंपनी बना रही है लेकिन जिस जिस कंपनी ने डॉक्टरों के बाजार में अपना प्रतिनिधि MR, ASM, RSM, NSM जैसे को भेजकर बिक्री के अनुसार गिफ्ट और पैकेज के दम पर उस दवा को बेहतर साबित कर दिया जाता है जिसमे सरकार को राजस्व का नुकसान होता है और कुछ राशि डॉक्टर को देकर कंपनी मालामाल हो जाती है और नींबू की तरह मरीज की और उसके परिजन को निचोड़ दिया जाता है। बीमार लोगों की बढ़ती संख्या को ध्यान में रखते हुए सैकड़ों बीमा कंपनी हेल्थ के योजना भी बेच रही है जिससे कुछ पैसों में मरीज का बेहतर इलाज संभव हो पाया है तो कुछ हेल्थ का बीमा कंपनी बीमा करते वक्त बहुत प्रलोभन देती है लेकिन बाद में पता चलता है की इस स्कीम में इस बीमारी को कंपनी कवर नहीं करती और बीमाधारक खुद को ठगाया हुआ महसूस करता है। निर्बंधित चिकित्सा व्यापारियों द्वारा उनके मेडिकल स्टोर और क्लीनिकों पर दवाओं की बिक्री भारत देश में, दवाओं के निर्माण, भंडारण, परिवहन, वितरण और वितरण को ड्रग्स और कॉस्मेटिक अधिनियम 1940 के तहत लाइसेंस और विनियमित किया जाता है। भारतीय चिकित्सा परिषद अधिनियम 1956; फार्मेसी अधिनियम 1948 और नारकोटिक ड्रग्स एंड साइकोट्रोपिक सब्सटेंस एकट 1985। जिस देश की जनता अपने लिए टॉयलेट नहीं बना सकती वह लाखों रुपए का इलाज कैसे करा पायेगी, गंभीर सवाल लिए सरकार के सामने खड़ी है। दवाओं की कीमत पर अंकुश लगाने में नाकामयाब केंद्र की सरकार के सामने भेड़ बकरी की तरह बढ़ती जनसंख्या भी चुनौती है और दवा के व्यापारी सरकार की मजबूरी को अच्छी तरह से जानते हैं जिसकी वजह से नीतियों का लाभ उठाकर डोलो 650MG का खेल को अंजाम देने में सफल हो जाते हैं। वैसे तो दवा कंपनी पर निगरानी रखने के लिए कई एजेंसियां हैं परन्तु भ्रष्टाचार के आकंठ में डूबे पदाधिकारी कंपनी के साथ मिलीभगत करके मरीजों के जीवन और सरकार के जन कल्याणकारी योजनाओं को बदनाम कर देती है। हजारों खबरें प्रकाशित हो चुकी हैं की सरकारी दवा प्राइवेट मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध हैं बाजार के दाम पर, कई पदाधिकारी जेल भी जा चुके हैं परन्तु दवा कंपनी के दमदार नेटवर्क के वजह से सबकुछ कुछ हीं दिनों में सामान्य हो जाता है। कोविड 19 के वायरस में दबा कंपनी का सच और सरकारी उदासीनता का पोल खुल चुका है और इस खेल में सभी राज्य शामिल है तो केंद्र की सरकार भी कम जिम्मेवार नही है। हद तो तब हो गया है की विभिन्न क्षेत्र के माफिया दवा कंपनी बनाकर खुद को सफेदपोश बन रहे हैं और दवा का निर्माण कराकर MR रखकर RMP डॉक्टर के द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में अपना कारोबार चला रहे हैं क्योंकि स्थानीय ड्रग कंट्रोलर आसानी से कुछ लेकर शांत हो जाता है। हजारों दवा की नकली कंपनी बाजार में काम कर रही है और अब तो दवा का मेडिकल स्टोर 15% की छूट दवा के MRP पर ग्राहक को दे रहा है। वैसे में अनुमान लगा सकते हैं की दवा के मेडिकल स्टोर को कितना प्रतिशत बचता होगा और दवा की कंपनी की उस दवा पर कितनी लागत होगी? जानकार मानते हैं कई कंपनी की सैकड़ों ऐसा प्रोडक्ट है जिसमे लागत से 200% से अधिक मुनाफा है इसी वजह से कंपनी डॉक्टरों को उस दवा को लिखने के लिए विदेश का भी टूर पैकेज ऑफर में देती है। भारत में गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए एक सक्रिय और गतिशील दृष्टिकोण की आवश्यकता पर जोर देती है। 8 जनवरी 2019 को कर्नाटक के कांग्रेसी सांसद केसी रामामूर्ति ने राज्यसभा में ये मुद्दा उठाया था। उन्होंने सरकार से ऐसी कंपनियों की जानकारी मांगी थी जो डॉक्टरों को रिश्वत देती हैं और ये भी पूछा था कि इन कंपनियों अथवा डॉक्टरों के खिलाफ क्या कार्रवाई हुई। इस पर तत्कालीन स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्यमंत्री अश्विनी चौबे ने बताया था, 'डिपार्टमेंट ऑफ फार्मास्युटिकल्स' (The Department of Pharmaceuticals & DoP) को दवा कंपनियों के खिलाफ इस तरह की कुछ शिकायतें प्राप्त हुई हैं। जिस पर जांच जारी है। इससे स्पष्ट है कि दवा कंपनियों की इस मनमानी और अनैतिक व्यापार से सरकार भी वाकिफ है। अनैतिक व्यापार करने वाली दवा कंपनियों की सूची और उनके खिलाफ हुई कार्रवाई का ब्यौरा मांगा लेकिन उनके खिलाफ कार्रवाई की कोई जानकारी नहीं दी गई। केवल सच पत्रिका कई स्तर पर आरटीआई व अपील दाखिल की, लेकिन उसे कंपनियों व डॉक्टरों के खिलाफ की गई कार्रवाई से संबंधित कोई संतोषजनक जवाब आज तक नहीं मिला। दवा कंपनियों और डॉक्टरों के इस गठजोड़ को सामने लाने का प्रयास किया जाता है बावजूद उनके खिलाफ कोई कार्रवाई समय पर नहीं होती।

KEWAL SACH TIMES

A National Magazine

वर्षः- 12, अंकः- 141 माहः- फरवरी 2023 रू. 10/-

Editor

Brajesh Mishra 9431073769
6206889040
8340360961

editor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach@gmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

Principal Editor

Arun Kumar Banka 7782053204
Surjit Tiwary 9431222619
Nilendu Kumar Jha 9431810505

General Manager (H.R)

Triloki Nath Prasad 9308815605

General Manager (Advertisement)

Manish Kamaliya 6202340243
Poonam Jaiswal 9430000482

Joint Editor/Lay-out Editor

Amit Kumar 9905244479
amit.kewalsach@gmail.com

Legal Editor

Amitabh Ranjan Mishra 8873004350
S. N. Giri 9308454485

Asst. Editor

Mithilesh Kumar 9934021022
Sashi Ranjan Singh 9431253179
Rajeev Kumar Shukla 7488290565

Sub. Editor

Arbind Mishra 6204617413
Prasun Pusakar 9430826922
Brajesh Sahay 7488696914

Bureau Chief

Sanket kumar Jha 7762089203
Sagar Kumar 9155378519

Bureau

Sridhar Pandey 9852168763
Sonu Kumar 8002647553

Photographer

Mukesh Kumar 9304377779

प्रदेश प्रभारी

दिल्ली हेड

संजय कुमार सिन्हा 9868700991

झारखण्ड हेड

ब्रजेश मिश्र (2) 7979769647
7654122344

पश्चिम बंगाल हेड

अजीत दुबे 9433567880
9339740757

मध्यप्रदेश हेड

अभिषेक पाठक 8109932505
8269322711

छत्तीसगढ़ हेड

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश हेड

निर्भय कुमार मिश्रा 9452127278

उत्तराखण्ड हेड

आवश्यकता है

महाराष्ट्र हेड

आवश्यकता है

गुजरात हेड

आवश्यकता है

आंध्र प्रदेश हेड

आवश्यकता है

राजस्थान हेड

आवश्यकता है

पंजाब हेड

आवश्यकता है

हरियाणा हेड

आवश्यकता है

राजस्थान हेड

आवश्यकता है

उड़ीसा हेड

आवश्यकता है

आसाम हेड

आवश्यकता है

हिमाचल हेड

आवश्यकता है

दिल्ली कार्यालय

केवल सच टाइम्स, द्विभाषीय पत्रिका,
द्वारा- संजय कुमार सिन्हा
97 ए, डी डी ए फ्लैट
गुलाबी बाग, नई दिल्ली- 110007
मो०- 09868700991, 09431073769

पश्चिम बंगाल कार्यालय

केवल सच टाइम्स, द्विभाषीय पत्रिका,
द्वारा- अजीत कुमार दुबे
131 चितरंजन एवेन्यू,
कोलकात्ता, पश्चिम बंगाल- 700073
मो०- 09433567880, 09339740757

झारखण्ड कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
द्वारा- अभिषेक कुमार मिश्र
महुआ टोली, गाड़ीगांव
होटवार, खेलगांव, राँची- 834012
मो०- 8789679740, 9431073769

विशेष प्रतिनिधी

भारती मिश्र 8521308428
बेंकटेश कुमार 8210023343

प्रकाशित आलेख पर आप अपना सुझाव एवं प्रतिक्रिया अवश्य दें।

केवल सच टाइम्स

द्विभाषीय मासिक पत्रिका

हमारा पता है

पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14,
मकान संख्या:- 14/28, कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार)
सम्पर्क करें:- 9431073769, 8340360961

हमारा ई-मेल

editor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

जनवरी 2022

मैं हीं बिहार

मिश्रा जी,

केवल सच टाइम्स पत्रिका की सभी खबरें जनकारीप्रद एवं संग्रहणीय होता है जो बाद में भी सटीक होता है। जनवरी 2023 अंक का संपादकीय मैं हीं बिहार, मैं हीं नीतीश कुमार में बिहार की गठबंधन की राजनीति और नीतीश कुमार के कार्यशैली पर ज्वलंत मुद्दा पर केंद्रित खबर को पाठकों के समक्ष रखा है की किस प्रकार नीतीश कुमार अपने व्यक्तिगत जीवन को राजनीति से जोड़कर ईर्ष्या के कारण अपने द्वारा सृजित बिहार को ध्वस्त कर दिया और इसके लिए दूसरे पर ठीकरा फोड़ रहे हैं। एक सफल राजनेता की पहचान रखने के मामले में नीतीश कुमार फिर 20 साल पीछे छूट गया है।

● **महेंद्र यादव,पानी टंकी, हनुमान नगर, पटना**

पीएम का रोड शो

संपादक महोदय,

केवल सच टाइम्स पत्रिका के जनवरी अंक में पीएम मोदी का रोड शो आलेख में प्रधानमंत्री पर फूलों की बारिश हुई तो दूसरी तरफ भारत जोड़ो यात्रा पर निकले राहुल गांधी की लोकप्रियता भी बढ़ी है, वैसे मैं राहुल गांधी की यात्रा और पीएम मोदी का रोड शो ने लोकसभा चुनाव 2024 का शंखनाद कर दिया है। अपने आलेख में पूरे विस्तार से अमित कुमार ने 2024 के चुनाव का विभिन्न राज्यों की राजनीतिक परिदृश्य को भी पूर्ण जानकारी के साथ रखा गया है की भारत जोड़ो यात्रा का असर भी देखने को अवश्य मिलेगा। सटीक समीक्षा करते हुए लेख लिखा गया है।

● **पंकज सक्सेना, आर के पुरम 1, नई दिल्ली**

दिल्ली सरकार

संपादक महोदय,

केवल सच टाइम्स द्विभाषीय पत्रिका का मैं नियमित पाठक हूं और इसके सभी खबरों को नियमित रूप से पढ़ता हूँ। जनवरी 2023 अंक में उप राज्यपाल के खिलाफ सड़क पर उतरी दिल्ली सरकार वाली खबर वास्तव में निराशाजनक है, जब सरकार खुद ही अपने ही सरकार से भिड़ने लगे सड़कों पर तो वैसे में आमजनता का विकास रुक जाता है और शासन प्रशासन से विश्वास उठने लगता है। दिल्ली में सरकार के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल हमेशा कोई न कोई बहाना बनाकर सड़क पर आंदोलन शुरू कर देते हैं और यही कारण है कि दिल्ली के निगम चुनाव में भी भाजपा को शिकस्त दी। सही खबर है।

● **कौशल पटेल, द्वारका 4, नई दिल्ली**

करियर

संपादक महोदय,

बढ़ती बेरोजगारी से परेशान युवाओं के लिए बेहतर करियर बनाना बड़ी चुनौती है लेकिन जनवरी 2023 अंक में डॉ संदीप भट्ट ने कंपटीशन एग्जाम कोचिंग में करियर आलेख में शिक्षित बेरोजगारों को कोचिंग संस्थान खोलकर करियर बनाने की सलाह को बहुत हीं गंभीरता पूर्वक पाठकों के बीच रखा है। सरकार नौकरी के विकल्प के रूप में कोचिंग सेंटर ने लाखों युवाओं को टॉप करियर के रूप में खड़ा किया है। साथ हीं डिजिटल युग में ऑनलाइन कोचिंग भीं करियर का रास्ता दिया है, इसको झुठलाया नहीं जा सकता। आपकी पत्रिका राजनीति और भ्रष्टाचार की खबर के साथ साथ प्रतियोगी छात्रों को भी पूर्ण जानकारी देती है।

● **संतोष महतो, मांडू, रामगढ़, झारखंड**

दमदार खबरें

मिश्रा जी,

केवल सच टाइम्स पत्रिका को मैं वेबसाइट www.kewalsachtimes.com पर उपलब्ध रहने की वजह से पढ़ लेता हूं। जनवरी 2023 अंक में एक से बढ़कर एक खबरों को स्थान दिया गया है जिसमे कोचिंग में करियर, सड़क पर दिल्ली सरकार, मरीज को दी गई जिंदगी, लोकसेवा आयोग के जरिए हो न्यायाधीश का चयन जैसी अन्य खबरें जानकारी के साथ साथ चिंतन करने लायक है। केवल सच टाइम्स पत्रिका इंटरनेट पर निशुल्क रहने की वजह से इसका विस्तार ज्यादा होगा और छात्र सहित युवाओं को राजनीति की सटीक जानकारी भी प्राप्त होगी। मुझे यह अंक का सभी खबर सारगर्भित लगा।

● **मोहन श्रीवास्तव, पासवान चौक, हाजीपुर**

हादसा

ब्रजेश जी,

जनवरी 2023 अंक में नेपाल में हुई हादसा पर अमित कुमार की खबर दर्दनाक विमान हादसा में कोई भी जिंदा नहीं बचा में काफी मार्मिक ढंग से लिखा गया है की किस प्रकार यह हादसा हुआ है इसके बाद किस संवेदनशीलता के साथ मृतक के प्रति गंभीरता के साथ 72 लोगों को अकाल मृत्यु पर सटीक जानकारी दी। यह खबर काफी मनहूस है लेकिन आखिर इतने बड़े हादसे की सच्चाई तक पहुंचना सरकार के लिए चुनौतीपूर्ण है परंतु सरकार ने कई जांच एजेंसियों को इस हादसे से जुड़ी तथ्यों को एकत्रित कर हादसे से निपटने का प्रयास के बारे में जानकारी एकत्रित करना शुरु कर दिया है। सभी खबर उचित हैं लेकिन हादसे की खबर ने आंखे नम कर दी।

● **शंकर यादव, रक्सौल, मोतिहारी**

अन्दर के पन्नों में

श्री चन्द्र प्रकाश सिंह

प्रधान संरक्षक सह प्रबंध संपादक
'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**
राष्ट्रीय संगठन मंत्री, राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस (इंटक)
पूर्व निदेशक सदस्य, ओरियेंटल बैंक ऑफ कॉमर्स
09431016951, 09334110654

डॉ. सुनील कुमार

शिशु रोग विशेषज्ञ सह मुख्य संरक्षक
'केवल सच' पत्रिका
एवं 'केवल सच टाइम्स'
एन.सी.- 115, एसबीआई ऑफिसर्स कॉलोनी,
लोहिया नगर, कंकड़बाग, पटना- 800020
फोन- 0612/3504251

श्री सज्जन कुमार सुरेका

मुख्य संरक्षक
'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**
डी- 402 राजेन्द्र विहार, फॉरेस्ट पार्क
भुवनेश्वर- 751009 मो-09437029875

सुधीर कुमार

मुख्य संरक्षक सह निदेशक ''**मगध इंटरनेशनल स्कूल**'' टेकारी
'' **केवल सच** '' पत्रिका **एवं** '' **केवल सच टाइम्स** ''
9060148110
sudhir4s14@gmail.com

श्री आर के झा

मुख्य संरक्षक
'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**
EX. CGM, (Engg.) N.B.C.C
08877663300

एक नजर

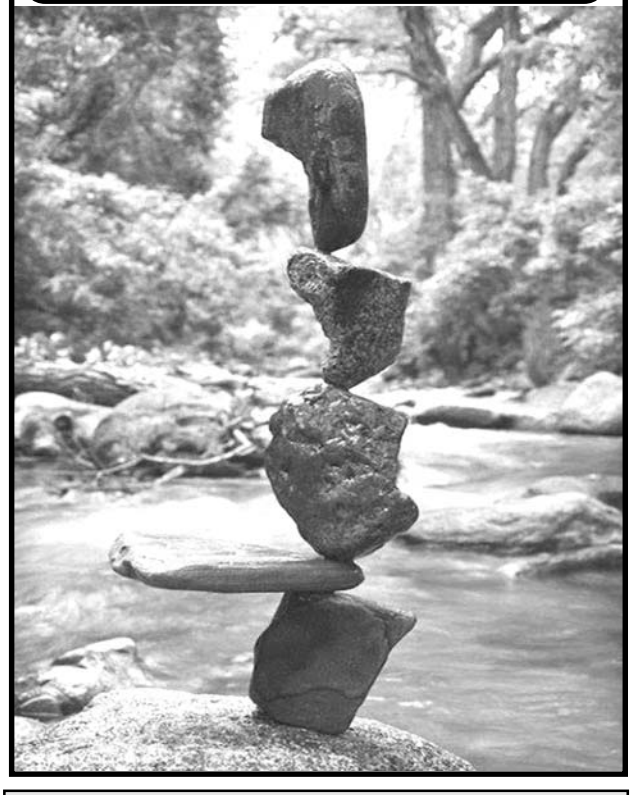

संपादकीय व प्रधान कार्यालय:-

- पूर्वी अशोक नगर, रोड नं:-14, मकान संख्या:- 28/14, कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार)
  e-mail:- kewalsach@gmail.com,
  editor.kstimes@rediffmail.com
  kewalsach_times@rediffmail.com
- स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक ब्रजेश मिश्र द्वारा जय हिन्द प्रेस कंकड़बाग पटना-800020 से मुद्रित एवं पूर्वी अशोक नगर, रोड नं. 14, कंकड़बाग पटना-800020 से प्रकाशित, संपादक- ब्रजेश मिश्र। **RNI NO.- BIHBIL/2011/49252**
- पत्रिका में प्रकाशित समाचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।
- सभी प्रकार के वाद - विवादों का निपटारा पटना न्यायालय के अधीन होगा।
- आलेख पर किसी को कोई आपत्ति हो तो एक महीने के भीतर खंडन करें।
- किसी भी लेख के लिए रचनाकार/लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे।
- सभी पद अवैतनिक हैं।
- विज्ञापन की सत्यता की जाँच आप अपने स्तर पर कर लें।
- फोटो-समाचार साभार भी (माध्यम- इंटरनेट एवं अन्य स्त्रोत)
- कोई भी शिकायत हमारे पते पर लिखकर भेजें।
- **विज्ञापन का भुगतान चेक या ड्राफ्ट एवं RTGS से ही मान्य होगा।**
- भुगतान BRAJESH MISHRA को ही करें। किसी प्रतिनिधि को नगद न दें।

A/C No.	:-	20001817444
BANK	:-	State Bank Of India
IFSC Code	:-	SBIN0003564
PAN No.	:-	AKKPM4905A

Contributions/Donations are Invited for the Welfare of Elders/Sr. Citizens for the establishment of "APNA GHAR" A home for Sr. Citizens of Bihar & Jharkhand Proposed to be Constructed Under the ageas of " KEWAL SACH SAMAJIK SANSTHAN".

KEWAL SACH SAMAJIK SANSTHAN

Registered Under the Indian Society Act 21, 1880

East Ashok Nagar, Road No.-14,
Kankarbagh, Patna - 800020

Contact No. :- 09431073769, 9955077308, 9308727077

E-mail :- kewalsachsamajiksansthan33@gmail.com

Reg. No. : 1141 (2009-10), Income Tax No. :12AA/2505-8 | 80 जी (5)/तक०/2013-14/1060-63

APNA GHAR

Now in the State of Bihar & Jharkhand

Help the helpless Elders/Sr. Citizen. For which your Contribution and Donation are essential.
Your Coopertation in this direction can make a diffrence in the lives of many Sr. Citizens.

KEWAL SACH SAMAJIK SANSTHAN

A/C No.	-	**0600010202404**
Bank Name	-	**United Bank of India**
IFSC Code	-	**UTBIOKKB463**
Pan No.	-	**AAAAK9339D**

अर्जी की चमत्कारी पर्ची विवादों में धीरेन्द्र शास्त्री!

● अमित कुमार

पंडित धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री, बागेश्वर धाम से अपने चमत्कारों और हिन्दू राष्ट्र जैसे बयानों से सुर्खियों में बने हुए हैं। आज सभी यह जानना चाहते हैं कि एक ऐसा संत जो प्रवचन देता है, रामकथा सुनाता है और फिर चमत्कार कर कष्ट परेशानियों को दूर भी करता है। आखिर यह कैसे संभव है? कौन हैं पंडित धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री जिनके चमत्कारों पर पत्रकारों और नेताओं के साथ ही धर्मगुरूओं की भी आलोचना करते देखी जा रही है, तो बता दें कि मध्यप्रदेश में छतरपुर जिले के छोटे से गांव गढ़ा में बागेश्वर धाम महाराज के नाम से प्रसिद्ध धीरेन्द्र कृष्ण गर्ग का जन्म 4 जुलाई 1996 में हुआ था। यह गांव खजुराहो से महज 20 किलोमीटर दूर है। उन्हें प्यार से घर-परिवार में धीरू नाम से पुकारा जाता है। उनका पालन पोषण गरीबी में हुआ। फिर धीरे-धीरे उन्होंने कथा करना शुरू किया और देखते ही देखते धीरू से धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री हो गए। धीरेंद्र जी के पिता का नाम राम करपाल गर्ग और मां का नाम सरोज गर्ग बताया जाता है। उनका एक छोटा भाई और एक बहन है। छोटा भाई शालिग्राम भी बागेश्वर धाम के कामकाज में मदद करते हैं। इनके दादाजी पंडित भगवान दास गर्ग (सेतु लाल) ने चित्रकूट के निर्मोही अखाड़े से दीक्षा प्राप्त की थी। बाद में उन्होंने ही बागेश्वर धाम का जीर्णोद्धार करवाया था। ऐसा कहा जाता जाता है कि बागेश्वर महाराज शास्त्री को बालाजी अर्थात हनुमानजी की कृपा से दिव्य सिद्धियां प्राप्त हैं। बागेश्वर बाबा कहते हैं कि चमत्कार तो बालाजी सरकार करते हैं। इनके गुरु प्रसिद्ध संत जगद्गुरु रामभद्राचार्य हैं। मीडिया की रिर्पोट्स की मानें तो धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री की नेट वर्थ करोड़ों में है। धीरेन्द्र शास्त्री ने 9 वर्ष की आयु से ही हनुमानजी की पूजा-अर्चना शुरू कर दी थी। वे साल 2003 से दिव्य दरबार की देख-रेख कर रहे हैं। कहा जाता है कि करीब 300 साल पहले मानव कल्याण और जनसेवा के लिए

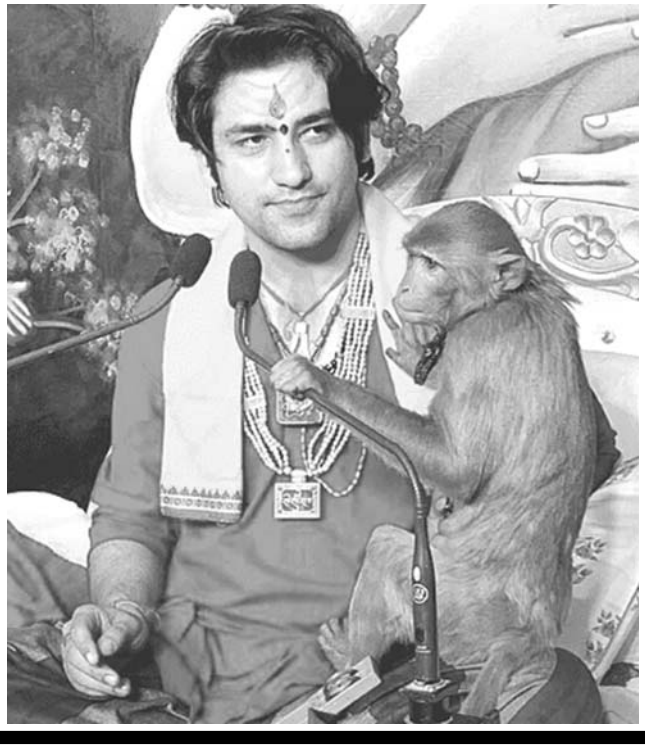

राम करपाल गर्ग

सरोज गर्ग

पंडित भगवान दास गर्ग

संन्यासी बाबा द्वारा बागेश्वर धाम को शुरू किया गया था। धीरेन्द्र शास्त्री जी द्वारा इसी परंपरा को आगे बढ़ाया गया है। अपने गुरु समान दादाजी भगवान दास गर्ग के बाद इन्होंने ही बागेश्वर धाम का कार्यभार संभाला। उनके दादाजी एक सिद्ध संत थे, जिनका नाम भगवानदास गर्ग था। पंडित धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री अपने दादाजी को ही अपना गुरु मानते थे। उन्होंने ही उन्हें रामायण और भागवत गीता का अध्ययन करना सिखाया था। बचपन से ही वे अपने दादाजी के साथ घर-घर सुंदरकांड करने जाते थे। कहते हैं कि उन्होंने कुछ समय तक उन्होंने भिक्षा मांगने का भी काम किया। पंडित धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री ने बड़ी मुश्किल हालातों में 8वीं तक पढ़ाई अपने गांव में की। इसके बाद की पढ़ाई के लिए वे 5 किलोमीटर पैदल चलकर गंज में जाते थे। वहां से उन्होंने 12वीं तक की पढ़ाई की और फिर बाद में बीए प्राइवेट किया। वे एक बहुत ही गरीब परिवार से संबंध रखते हैं। खुद धीरेंद्र शस्त्री अपने ही दरबार में कहते हैं कि बचपन में उनके पास कभी-कभार एक वक्त का भोजन भी नहीं मिलता था। हमारे पिताजी गरीब थे। वे दान दक्षिणा लेकर ही हमारा भरण-पोषण करते थे। एक दिन हमने उनसे कहा की हम भी पढ़ना-लिखना चाहते हैं। वृंदावन में जाकर कर्मकांड पढ़ना चाहते हैं। उनके पिताजी के पास उस वक्त 1000 रुपए नहीं थे। उन्होंने गांव में कई लोगों से उधार रुपए मांगे कि मेरा बेटा पढ़ना चाहता है लेकिन किसी ने उधार नहीं दिया। क्योंकि सभी जानते थे कि यह चुका नहीं पाएगा। हम तब वृंदावन नहीं जा पाए। लेकिन बाद में हनुमान जी और उनके स्वर्गीय दादाजी की ऐसी कृपा हुई की उन्हें दिव्य अनुभूति का अहसास होने लगा और वे भी लोगों के दु:खों को दूर करने के लिए दादाजी की तरह 'दिव्य दरबार' लगाने लगे। हालांकि 9 वर्ष की उम्र में ही वे हनुमान जी बालाजी सरकार की भक्ति, सेवा, साधना और पूजा करने लगे थे। कहते हैं कि इसी साधना का उन पर ऐसा असर हुआ की, बालाजी की कृपा से उन्हें सिद्धियां प्राप्त हुई। उनके भक्तों का दावा है कि धीरेंद्र लोगों के मन की बात को पर्चे पर उतार देते हैं, साथ ही उनकी समस्या का हल भी बता देते हैं। 1 जून से 15 जून तक ब्रिटेन के प्रवास के दौरान उन्होंने लंदन और लेस्टर में श्री हनुमत कथा और श्रीमद भागवत कथा का वाचन किया। उन्हें वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड लंदन, वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड ब्रिटेन और संत शिरोमणि का अवार्ड मिला है। यह सम्मान उन्हें सामाजिक और धार्मिक कामों को देखते हुए दिया गया। बाबा ने एक कथा के दौरान ही कहा था कि जब मैं लंदन पहुंचा तो कई अंग्रेजों ने मुझसे कहा कि अंग्रेजी सीख लीजिए तो मैंने कहा तुम हिन्दी सीखो। हम यहां अंग्रेजी सीखने नहीं आए हैं।

गौरतलब हो कि पंडित धीरेंद्र शास्त्री आजकल अपनी रामकथा और दिव्य दरबार को लेकर बहुत चर्चित हो रहे हैं। कुछ-एक विवादित बयानों को लेकर भी उनकी चर्चा हो रही है। कहते हैं कि वे उनके दादाजी की तरह छतरपुर के एक गांव गड़ा में बालाजी हनुमान मंदिर के पास 'दिव्य दरबार' लगाने

लगे। उनके लोग इस दरबार के वीडियो को सोशल मीडिया पर पोस्ट करते थे। धीरे-धीरे वे सोशल मीडिया के माध्यम से वे लोकप्रिय हो गए। छतरपुर के पास गढ़ा में बागेश्वर धाम है, जहां पर बालाजी हनुमानजी का मंदिर है। हनुमानी के मंदिर के सामने ही महादेवजी का मंदिर है। मंदिर के पास ही उनके दादाजी का समाधी स्थल और उनके गुरुजी का समाधी स्थल है। यहां पर मंगलवार को अर्जी लगती है। बागेश्वर धाम में अर्जी लगाने के लिए पहले टोकन वितरित किए जाते हैं। टोकन एक निर्धारित तारीख को ही डाले जाते हैं, जिसकी घोषणा स्वयं धीरेन्द्र शास्त्री करते हैं। इसकी सूचना सोशल मीडिया के माध्यम से दी जाती है। परिसर में रखी पेटी में भक्तगणों को अपना नाम, पिता का नाम, गांव, जिला, राज्य का नाम पिन कोड के साथ अपना मोबाइल नंबर भी लिखकर डालना होता है। टोकन डालने के बाद जिस भी व्यक्ति का नंबर लगता है, उन्हें कमेटी द्वारा संपर्क कर टोकन दे दिया जाता है। इस टोकन में एक निर्धारित तारीख होती है और उस दिन ही श्रद्धालु को बागेश्वर धाम में अपनी अर्जी लगानी होती है। अर्जी लगाने के लिए लोग लाल कपड़े में नारियल बांधकर अपनी मनोकामना बोलकर उस नारियल को यहां एक स्थान पर बांध देते हैं और मंदिर की राम नाम जाप करते हुए 21 परिक्रमा लगाते हैं। यदि सामान्य अर्जी है तो नारियल को लाल कपड़े में, विवाह संबंधित अर्जी है तो पीले कपड़े में और भूत-प्रेत से जुड़ी बाधा के नारियल को काले कपड़े में बांधना होता है। ऐसा दावा किया जाता है कि जो भी श्रद्धालु दरबार में अपनी अर्जी लगाता है, उसकी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। यहां पर लाखों की संख्या में नारियल बंधे हुए मिल जाएंगे। मंदिर के पास ही गुरुजी का दरबार लगता है जहां पर लाखों की संख्या में लोग आते हैं। बताया जा रहा है कि उनके दरबार में पहले सैंकड़ों लोग अपनी समस्या लेकर आते थे। उन सैंकड़ों लोगों में से पंडित धीरेंद्र शास्त्री जी किसी का भी नाम लेकर उन्हें बुलाते थे और वह व्यक्ति जब तक उनके पास पहुंचता तब तक शास्त्रीजी एक पर्चे पर उस व्यक्ति के नाम पते सहित उसकी समस्या लिख लेते और उसी में उसका समाधान भी लिख लेते। लोग आश्चर्य करने लगे की यह व्यक्ति किस तरह दूर-दूर से आए अनजान लोगों को उनके नाम से बुला लेते हैं और कहते हैं कि आओ तुम्हारी अर्जी लग गई। धीरेंद्र शास्त्री यही नहीं लोगों को यह भी बता देते हैं कि उनकी समस्या क्या है, कितनी है और कब से है। उनके पिता का नाम क्या है और बेटे का नाम क्या है। कई मीडिया चैनल वालों ने इस बात की पड़ताल की, लेकिन वह यह रहस्य नहीं जान पाए कि आखिर यह व्यक्ति कैसे लोगों

के मन की बात जान लेता है। छोटे से गांव गड़ा में जब सैंकड़ों से हजारों और हजारों से लाखों लोग आने लगे तो धीरेंद्र शास्त्री जी ने दूसरे शहरों में जाकर 'दिव्य दरबार' लगाना प्रारंभ कर दिया। इस पर उनका कहना है कि लाखों लोगों का पर्चा बनाना संभव नहीं, इसीलिए अब हम खुद ही लोगों के पास जाकर उनके शहर में दरबार लगा लेते हैं ताकि लोगों को सुविधा हो। हमारा यह दरबार नि:शुल्क है। मंदिर में या रामकथा से हमें जो भी पैसा मिलता है, हम उसे गरीब की बेटियों की शिक्षा और शादी में खर्च करते हैं। धीरेन्द्र शास्त्री बताते हैं कि ईष्ट की कृपा से हमें अनुभव हो जाता है कि ऐसा होगा और हम उसी बात को कागज पर लिखकर दे देते हैं। हम भगवान नहीं हैं। सब गुरु और हनुमान जी की कृपा है। हनुमानजी सिर्फ आप पर ही मेहरबान क्यों? इस सवाल के जवाब में शास्त्री ने कहा कि हनुमानजी के लाखों भक्त हैं, लेकिन हमने विश्व के लिए मांगा है, जबकि लोगों ने खुद के लिए मांगा होगा। शायद कुछ ज्यादा ही घनिष्ठता होगी हमारी हनुमानजी से। उन्होंने कहा कि मैंने कभी नहीं कहा कि मैं चमत्कारी हूं। बागेश्वर धाम के नाम से पीड़ितों के चेहरों पर मुस्कराहट आती है तो इसमें बुराई क्या है। कैंसर अस्पताल की बात पर वे कहते हैं कि दवा और दुआ दोनों ही आवश्यक है। डॉक्टर भी ऑपरेशन के बाद कहता है कि प्रार्थना करिए सब ठीक हो। हमें न धन प्रिय है, न मान प्रिय है, न सम्मान प्रिय है, हमें सिर्फ हनुमान प्रिय हैं। दुनिया का

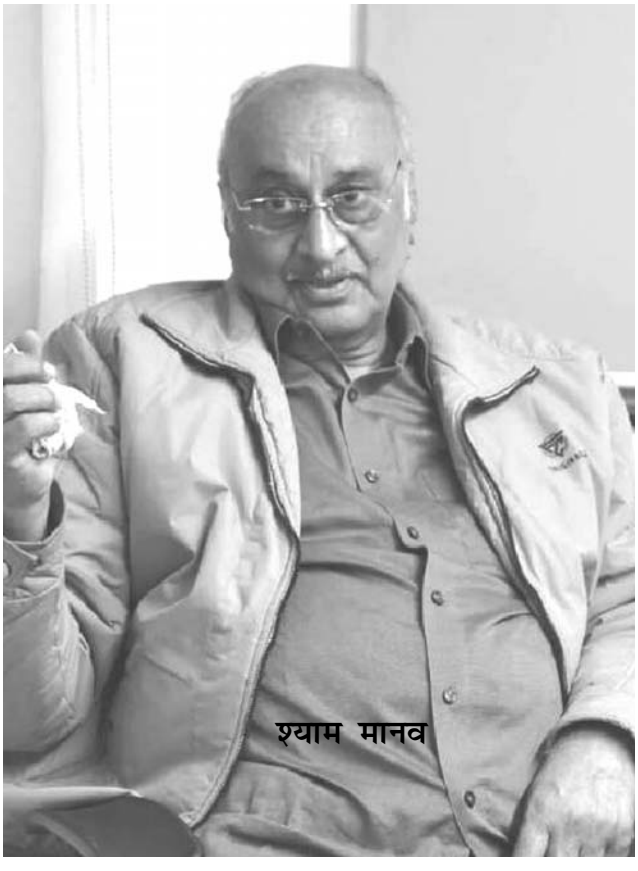

श्याम मानव

प्रत्येक भक्त धनवान है, जिसके जीवन में हनुमान हैं।

बहरहाल, लोगों के मन की बात पर्चे पर उतारने और उनकी समस्याओं का समाधान करने का दावा करने वाले युवा संत बागेश्वर धाम के धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री की शोहरत भारत में तो उनके चमत्कार के चर्चे हैं ही, सात समंदर पार लंदन तक पहुंच चुकी है। उनकी कथाओं में हजारों की संख्या में लोग जुटते हैं। लेकिन, इस बार बाबा को महाराष्ट्र की 'अंध श्रद्धा निर्मूलन समिति' की चुनौती ने मुश्किल में डाल दिया है। समिति ने उन्हें चमत्कार साबित करने पर 30 लाख रुपए देने की बात भी की है। हालांकि बड़ा सवाल यह है कि क्या बागेश्वर बाबा चुनौती पर खरे उतरेंगे? ज्ञात हो कि धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री के नागपुर में 5 से 13 जनवरी तक रामकथा प्रवचन थे। इसी बीच, उनके वीडियो देखकर महाराष्ट्र की 'अंध श्रद्धा निर्मूलन समिति' के प्रमुख श्याम मानव ने उन्हें चुनौती देते हुए कहा था कि यदि शास्त्री उनके 10 लोगों में से 9 लोगों के नाम भी सही बता देंगे तो वे उन्हें 30 लाख रुपए देंगे, साथ ही उनका विरोध करना भी छोड़ देंगे। समिति के मुताबिक श्याम मानव रामकथा आयोजन में जाने वाले थे, लेकिन इसकी भनक लगते ही बाबा कथा छोड़कर 2 दिन पहले ही वहां से चले गए। बाद में बाबा के समर्थकों ने कहा कि शास्त्री को कैंसर अस्पताल से संबंधित एक बैठक में भाग लेने जाना था, इसलिए वे बीच में ही चले गए। 'अंध श्रद्धा निर्मूलन समिति' का आरोप है कि

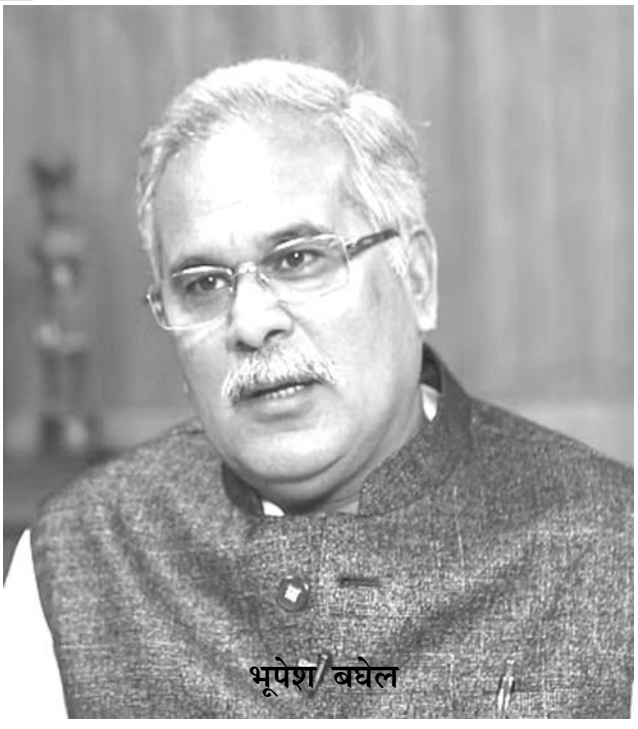
भूपेश बघेल

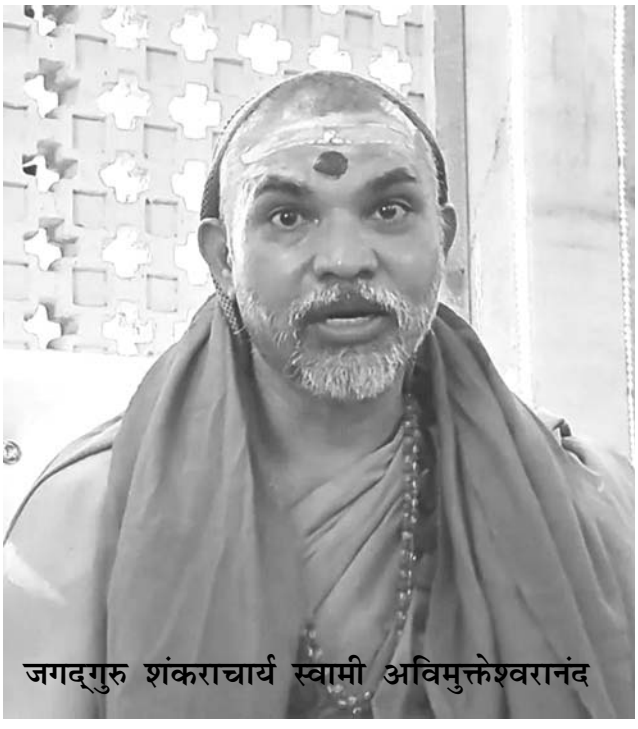
जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद

बाबा भीड़ में अपने ही समर्थकों को बैठाते हैं। समिति का कहना है कि बाबा को श्याम मानव को अपने धाम बुलाना चाहिए। या फिर अपनी बात साबित करने के लिए कहीं और बुलाने की तारीख देनी चाहिए। इस बीच, खबर आ रही कि शास्त्री ने 'अंध श्रद्धा निर्मूलन समिति' के सदस्यों को 20-21 जनवरी को रायपुर बुलाया था। इसके लिए वे समिति के टिकट का खर्चा उठाने के लिए भी तैयार हैं। हालांकि बाबा का कहना है कि जो भी हिन्दू धर्म का अपमान करेगा, उसके खिलाफ वे बोलते रहेंगे। वहीं समिति के प्रमुख श्याम मानव ने मीडिया से चर्चा में कहा कि मैं इंडियन साइंस कांग्रेस के लिए नागपुर आया था। इसी बीच, मुझे धीरेन्द्र शास्त्री की कथा और उनके दिव्य दरबार के बारे में जानकारी लगी। मैंने अपनी टीम के सदस्यों से उनके पुराने वीडियो दिखवाए और उनमें से आपत्तिजनक क्लिप्स निकालीं और इसके बारे में पुलिस को जानकारी दी। इन क्लिप्स में कई चीजें ऐसी हैं जो न सिर्फ महाराष्ट्र बल्कि केन्द्र सरकार के कानून का भी उल्लंघन करती हैं। बता दें कि महाराष्ट्र के प्रसिद्ध संत तुकाराम पर टिप्पणी करने के बाद धीरेन्द्र शास्त्री विवादों में घिर गए थे। उन्होंने कहा था कि संत तुकाराम को उनकी पत्नी रोज पीटती थीं। इसको लेकर महाराष्ट्र के विभिन्न राजनीतिक दलों ने बाबा की आलोचना की थी। वही श्याम मानव के मुताबिक महाराष्ट्र जादू-टोना विरोधी कानून 2013 के मुताबिक गलत चीजों का प्रचार-प्रसार करना भी गुनाह है। यह गैर जमानती अपराध है। इस कानून के तहत 6 माह से 7 साल तक की सजा का प्रावधान है, जबकि 5 से 50 हजार रुपए तक के जुर्माने का प्रावधान है। ऐसे मामलों की जांच की जिम्मेदार इंस्पेक्टर एवं उससे ऊपर के ओहदे वाले अधिकारी को सौंपी जाती है। श्याम मानव के मुताबिक ऐसे मामलों में पुलिस की जिम्मेदारी बनती है कि वह खुद एफआईआर दर्ज करे और मामले को कोर्ट तक पहुंचाए। इस मामले में केन्द्र सरकार का ड्रग एंड मेजिक रेमिडी एक्ट 1954 भी है।

वही दूसरी ओर बागेश्वर धाम के महंत के चमत्कारों को लेकर घमासान मचा हुआ है। इस बीच छत्तीसगढ़ के सीएम भूपेश बघेल का भी बयान सामने आया है। बघेल ने धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री के चमत्कार दिखाने को गलत बताया है। बघेल ने कहा कि लोगों को सिद्धियां मिलती हैं। रामकृष्ण परमहंस और भगवान बुद्ध इसके उदाहरण हैं। सिद्धियों से इनकार नहीं किया जा सकता, लेकिन चमत्कार नहीं दिखाना चाहिए। ये जादूगरों का काम है। यह उचित नहीं है। सिद्धियों

का प्रयोग चमत्कार दिखाने में नहीं करना चाहिए। ऋषि-मुनियों ने भी कहा है। चंगाई सभा में भी यही चमत्कार है। इससे जड़ता आती है। धर्म बचाने का ठेका लेने वाले धोखे में है। उल्लेखनीय है कि बागेश्वर धाम के धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री के समर्थन में दिल्ली में धरना भी हुआ। दिल्ली के रोहिणी में लोग धीरेंद्र शास्त्री के समर्थन में धरना दिये। हालांकि पहले ये धरना जंतर-मंतर पर होना था, लेकिन सुरक्षा कारणों की वजह से इसका स्थान बदल दिया गया। इसमें भाजपा नेता कपिल मिश्रा भी शामिल हुए।

कपिल मिश्रा

गौरतलब हो कि विवादों से घिरे बागेश्वर धाम के महंत धीरेंद्र शास्त्री को लेकर बिलासपुर पहुंचे जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद का बड़ा बयान आया है। स्वामी ने धीरेंद्र शास्त्री को चुनौती देते हुए सवाल किया कि जोशीमठ के मकानों में दरारें आ गई है, दरारों को चमत्कार से भर दें तो वो उनका स्वागत करेंगे। उन्होंने कहा, जो चमत्कार दिखा रहे हैं, ऐसे चमत्कार दिखाने वालों के लिए हम फूल बिछाएंगे। खबरों के अनुसार, जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद ने बागेश्वर धाम के महंत धीरेंद्र शास्त्री को चुनौती देते हुए कहा है कि वे जोशीमठ आकर धंसकती हुई जमीन को रोककर दिखाएं, तब हम उनके चमत्कार को मान जाएंगे। स्वामी ने कहा, यहां जो दरारें आई हैं, वह हमारे मठ में आई है, उसको जोड़ दो। हम उनको फूल बिछाकर ले आएंगे। इस बीच शंकराचार्य ने हाथ की सफाई करने वालों को भी निशाने पर लिया। उन्होंने कहा कि एक नारियल जो हम पहले से लेकर आए हैं,

उसमें से चुनरी निकाल दें या सोना निकाल दें। इससे जनता का क्या भला होगा? वही अलग-अलग स्थानों पर मीडिया से बातचीत में धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री ने कहा है कि मैं कोई चमत्कारी व्यक्ति नहीं हूं न ही किसी के मन की बात जानने की शक्ति रखता हूं। मैं कोई बागेश्वर सरकार भी नहीं हूं, मैं धीरेंद्र कृष्ण गर्ग हूं। बागेश्वर सरकार तो बालाजी महाराज हैं, जिनकी प्रेरणा से ही मैं लोगों की समस्या का हल करता हूं। उन्होंने कहा कि यह हनुमानजी की ही शक्ति है, जब मैं गद्दी पर बैठता हूं तो उन्हीं की प्रेरणा से बोलता हूं। मेरे में कोई शक्ति नहीं है। गद्दी से अलग से मैं किसी के बारे में कुछ भी नहीं बता सकता। हनुमान जी जिस व्यक्ति के बारे में प्रेरणा देते हैं, मैं उसी के बारे में बता सकता हूं। आलोचनाओं पर शास्त्री ने कहा कि लोगों ने भगवान राम को नहीं छोड़ा तो मैं क्या चीज हूं। उन्होंने एक पुरानी कहावत का उल्लेख करते हुए कहा कि 'हाथी निकलता है बाजार, तो भौंकते हैं हजार'।

कितना संभव है भारत के लिए हिन्दू राष्ट्र की मांग?

● अमित कुमार

पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री जब धीरे-धीरे लोकप्रिय होने लगे तो अब वे रामकथा भी कहने लगे हैं। जगह जगह जाकर वे रामकथा कहते हैं और लोगों को हनुमानजी की भक्ति करने के लिए प्रेरित करते हैं। रामकथा के दौरान ही वे कुछ ऐसे भी बोल जाते थे कि जिससे विवाद उत्पन्न हो जाता है। हाल ही में उन्होंने रामनवमी के जुलूस पर पत्थर फेंके जाने वाली घटना पर कड़ी प्रतिक्रिया देते हुए हिन्दुओं को कहा कि 'जाग जाओ और एक हो जाओ अगर तुम अभी नहीं जागे तो यह तुम्हें अपने गांव में भोगना पड़ेगा। इसलिए निवेदन है कि सब हिंदू एक हो जाओ और पत्थर मारने वालों के घर पर बुलडोजर चलवाओ'। दूसरी तरफ हिन्दुओं को हथियार रखने की बात पर धीरेन्द्र शास्त्री कहते हैं कि मैं आत्मरक्षा में भाला रखने की बात करता हूं। यह बात हमारी ऋषि परंपरा में भी कही गई है। जहां तक बुलडोजर रखने की बात है तो टेक्नोलॉजी के हिसाब से हमें भी बदलना चाहिए। उन्होंने कहा कि मैंने कभी भी हिंसा का समर्थन नहीं किया, लेकिन जब सनातन की बात उठती है, षड्यंत्र शुरू हो जाते हैं। मैं हमेशा सनातन की बात करता रहूंगा। हालांकि हमें मुस्लिमों से न कोई आपत्ति है न ही ईसाइयों से। हम सिर्फ मानवता के पुजारी हैं। हम किसी को हिंसक भाषा के उपयोग की छूट नहीं देते।

बहरहाल, उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि भारत हिन्दू राष्ट्र था, है और आगे भी रहेगा। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि अखंड भारत भी बनकर ही रहेगा, यही सच्चाई है। सीएम योगी ने एक चर्चित न्यूज चैनल के कार्यक्रम में स्पष्ट शब्दों में कहा कि भारत हिन्दू राष्ट्र है और आगे भी रहेगा। उन्होंने सवालिया लहजे में कहा हिन्दू राष्ट्र से हमारा मतलब क्या है? योगी ने आगे कहा कि हिन्दू मतलब, मजहब या संप्रदाय नहीं है, यह एक सांस्कृतिक शब्दावली है, जो कि भारत के हर आदमी के लिए फिट बैठती है। उन्होंने कहा कि कोई व्यक्ति जब हज करने जाता है, तो वह वहां हिन्दू नाम से ही जाना जाता है। वहां उसे कोई हाजी या इस्लाम के रूप में नहीं मानता, जब वहां हिन्दू नाम से किसी को कोई परेशानी नहीं तो यहां भी क्यों होनी चाहिए? भारत का हर नागरिक हिन्दू है और भारत हिन्दू राष्ट्र है, था और रहेगा। यह कोई जातिसूचक शब्द नहीं है। हिमालय से लेकर समुद्र तक विस्तृत भू-भाग पर रहने वाले सभी व्यक्ति हिन्दू हैं। योगी ने कहा कि संविधान के प्रति हर भारतीय के मन में सम्मान का भाव होना चाहिए, यही हमारा मार्गदर्शक है। अखंड भारत से जुड़े प्रश्न पर जब एंकर ने कहा कि पाकिस्तान लगातार नीचे जा रहा है, वहां के लोगों ने भी फिर से विलय की बात कही है? इस पर मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि श्री

धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री

अरविन्द ने स्पष्ट घोषणा की थी कि आध्यात्मिक जगत में पाकिस्तान की कोई वास्तविकता नहीं है। जिसकी वास्तविकता नहीं, वह इतने दिन चल गया, यही बड़ी बात है। जितनी जल्दी हो वह खुद को भारत में समाहित कर दे, वही उसके हित में होगा। अखंड भारत तो बनना ही बनना है, यही सच्चाई भी है। वही लखनऊ का नाम बदलने के प्रश्न पर योगी ने कहा कि अभी लखनऊ का नाम बदलने की कोई योजना नहीं है। साथ ही यह भी कहा कि नाम बदलने समय हम बताते नहीं है। उल्लेखनीय है कि हाल में सपा नेता स्वामी प्रसाद मौर्य ने भी लखनऊ का नाम लखन पासी के नाम पर लखनपुर करने की मांग की है।

योगी आदित्यनाथ

गौरतलब हो कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के हिंदू राष्ट्र के खुले समर्थन के बाद बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा कि इसकी अवधारणा महात्मा गांधी के आदर्शों के खिलाफ है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की बात को छोड़कर किसी की बात नहीं सुनना चाहिए। अगर कोई कुछ बोलता है तो समझिए कि वो देश को खत्म करना चाहता है। हिंदू राष्ट्र के योगी आदित्यनाथ के समर्थन पर कुमार से सवाल पूछा गया था। नीतीश ने कहा, यह भारत देश है, यहां यह संभव नहीं है। विभिन्न धर्म को मानने वाले लोग यहां रहते हैं।

इस देश के बारे में अगर कोई कुछ बोलता है तो उसका कोई महत्व नहीं है। उन्होंने कहा, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की बात को छोड़कर किसी की बात को नहीं सुनना चाहिए। अगर कोई कुछ बोलता है तो समझिए कि वो देश को खत्म करना चाहता है। यह संभव नहीं है। अंत में गांधी जी की हत्या भी कर दी गई। नीतीश ने कहा, बापू की बातों पर ही हमलोग आगे काम कर रहे हैं। उन्होंने जो देश के बारे में कहा है उसी को लेकर देश को आगे बढ़ना है। बाकी लोगों को जो बोलना है बोलते रहें, लोकसभा चुनाव में जनता फैसला करेगी।

बिडम्बना है कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से लेकर बागेश्वर धाम के धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री तक सभी इन दिनों भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने की बात कर रहे हैं। हालांकि कभी नेपाल ही एकमात्र ऐसा देश था, जो आधिकारिक रूप से हिन्दू राष्ट्र था। लेकिन, 2008 में राजशाही को समाप्त कर नेपाल को भी धर्मनिरपेक्ष देश बना दिया गया। एक अनुमान के मुताबिक विश्व के करीब 52 से अधिक देशों में हिंदू रहते हैं, जिसमें भारत, नेपाल, फिजी, सूरीनाम और

डॉ० मनमोहन सिंह

नीतीश कुमार

मॉरीशस में हिन्दू बहुसंख्यक हैं। भारत 1976 में धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र बना, इससे पहले संविधान में पंथ निरपेक्ष शब्द का उल्लेख था। दूसरी ओर, विश्व में 50 से ज्यादा इस्लामिक राष्ट्र हैं। इनमें से बहुत से देश ऐसे भी हैं जो विशुद्ध रूप से इस्लामी कानून से ही संचालित होते हैं, जबकि कई देश ऐसे हैं जहां लोकतांत्रिक व्यवस्था तो है, मगर वे इस्लामिक राष्ट्र हैं। ऐसे देशों में गैर मुस्लिमों को तुलनात्मक रूप से कम अधिकार हैं। जबकि, भारत में जाति और धर्म के आधार पर किसी से भी भेदभाव नहीं किया जाता है। भारत में तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने तो यहां तक कहा था कि देश के संसाधनों पर पहला अधिकार अल्पसंख्यकों का है। वहीं, विश्व में करीब 90 देश ऐसे हैं जो ईसाई बहुल हैं। अब सवाल है कि कहां से उपजी हिन्दू राष्ट्र की धारणा? तो बता दें कि 1925 में

मोहम्मद बीन कासिम

संघ की स्थापना हुई और उसके बाद से ही अखंड भारत और उसी के साथ ही हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा को बढ़ावा मिला। उस वक्त हिंदुत्व के सबसे प्रभावशाली विचारक विनायक दामोदर सावरकर ने अपनी किताब 'हिंदुत्व : कौन है हिंदू' में इस बारे में विस्तार से लिखा। भारत को हिंदू राष्ट्र घोषित किए जाने का विचार आगे बढ़ता है तो इसके लिए सबसे पहले कैबिनेट की मंजूरी लेनी होगी और फिर इसके बाद संविधान में संशोधन करने की आवश्यकता भी होगी। संशोधन के बाद ही 'धर्म निरपेक्ष' की जगह भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाया जा सकता है, परंतु अभी तक न तो कैबिनेट ने ऐसा कोई प्रस्ताव पारित किया है और न ही ऐसा कोई प्रस्ताव संसद के किसी भी सदन में विचाराधीन है और न ही आगे इसकी कोई संभावना नजर आती है। हालांकि प्राचीन काल में भारत 16 से 18 जनपदों में

विनायक दामोदर सावरकर

महाराणा प्रताप

क्षत्रपति शिवाजी

कृष्णदेव राय

भारत-पाकिस्तान का विभाजन

विभाजित था। हर जनपद का राजा अपने शासन क्षेत्र में राज पुरोहितों और मंत्रियों की सलाह से अपनी नीति तय करता था। सभी जनपदों का मूल धर्म वैदिक धर्म ही था। लेकिन कहीं पर शैव पंथ तो कहीं पर वैष्णव पंथ का ज्यादा प्रचलन था तो कहीं पर कार्तिकेय, स्मार्त, शाक्त और कहीं पर गणपति संप्रदाय का जोर था। प्राचीन काल में ऋषभदेव की परंपरा में जब भरतबाहु ने इस संपूर्ण भरत खंड पर राज किया था तब भारत एक ऐसा राष्ट्र था जहां पर जैन, वैदिक विचारधारा और चार आश्रम आधारित व्यवस्था का सम्मान किया जाता था। तब सभा और समिति मिलकर काम करती थी। महाभारत तक यह परंपरा प्रचलित रही। राजा विक्रमादित्य के काल में जब संपूर्ण भरतखंड उनके अधिकार क्षेत्र में था जब अघोषित रूप से यह एक हिन्दू राष्ट्र (सनातन) ही था। उनके राज्य क्षेत्र में शैव, वैष्णव, शाक्त, कार्तिकेय, गणपत, वैदिक सभी पंथों का सम्मान था और वे सभी भारतीय धर्म और संस्कृति की मूल विचारधारा के साथ जीवन यापन करते थे।

सम्राट अशोक के काल में यह देश बौद्ध धर्म की राह पर चलने लगा और इसके बाद यह पुष्यमित्र शुंग के काल में पुन: वैदिक धर्म की विचारधारा से संचालित होने लगा। सम्राट हर्षवर्धन और पुलकेशिन द्वितीय तक भारत हिंदुत्व की विचारधारा से ही संचालित होता रहा। मध्यकाल के प्रारंभिक काल में जहां भारत में हजारों मंदिर बनाए गए वहीं भारतीय धर्म की पताका भी विश्व भर में फहराई गई लेकिन इसी दौर में मोहम्मद बिन कासिम के आक्रमण और उसके बाद के आक्रमणों से भारत में इस्लाम धर्म का विस्तार हुआ। इस्लामिक आक्रमणों के दौर और यहां पर अधिकतर क्षेत्रों पर मुस्लिमों की सत्ता कायम होने के बाद युद्ध का एक नया दौर चला जिसमें भारत को पुन: एक हिन्दू राष्ट्र बनाए जाने का संघर्ष चला और इस संघर्ष में तीन सबसे बड़े नाम उभरकर आए पहला कृष्णदेव राय (1509 ई.-1529), दूसरा वीर महाराणा प्रताप (1540-1597), तीसरा छत्रपति शिवाजी महाराज (1630-1680)। विजयनगर साम्राज्य राजपूत साम्राज्य और मराठा साम्राज्य ने पुन: हिन्दुत्व पर आधारित शासन क्षेत्र कायम किया। अंग्रेजों के आने के बाद संपूर्ण भरतखंड ब्रिटिश शासन के अंतर्गत आ गया और फिर 200 वर्ष की गुलामी के बाद चले आजादी के आंदोलन के बाद 1947 में भारत का धर्म के आधार पर विभाजन हो गया। पाकिस्तान बना मुस्लिम राष्ट्र और हिंदुस्तान बना एक 'गणतांत्रिक देश'। भारत का संविधान 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ। उसी दिन से

हिन्दू राष्ट्र नेपाल

स्वामी प्रसाद मौर्य

भारत एक लोकतांत्रिक देश के रूप में उभरकर सामने आया। लेकिन 26 साल बाद 1976 में 42वां संशोधन करके उसकी प्रस्तावना में भारत के लिए 'समाजवादी धर्म निरपेक्ष' शब्द जोड़ा गया।

बहरहाल, हाल ही में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के हिंदू राष्ट्र का खुला समर्थन किया। जिसका बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने विरोध करते हुए कहा कि इसकी अवधारणा महात्मा गांधी के आदर्शों के खिलाफ है। दूसरी ओर संघ प्रमुख मोहन भागवत कह चुके हैं कि भारत 15-20 सालों में अखंड राष्ट्र बन जाएगा। लोगों ने अखंड भारत के निर्माण में सहयोग नहीं भी किया, तो भी ऐसा होकर ही रहेगा। हां, तब समय 20 से 25 साल तक लग सकते हैं, लेकिन कोई ये न सोचे कि ऐसा होना नामुमकिन है। देखा जाए तो अखंड भारत और हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा या सपना कोई नया नहीं है। यह तो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के पूर्व से ही चला आ रहा विचार है, जिसे संघ ने स्थापित किया। अब इसकी मांग इसलिए ज्यदा जोर पकड़ने लगी है क्योंकि इसी विचारधारा से जुड़े लोग सत्ता में हैं। यहां यह बात समझना होगी कि अखंड भारत का दायरा हिंदू राष्ट्र के मुकाबले काफी बड़ा है। अखंड भारत में पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, नेपाल, बर्मा आदि कई देश शामिल होते हैं जबकि हिन्दू राष्ट्र वर्तमान भारत और उसकी सीमा के संदर्भ में परिभाषित होता है। जानकार लोग कहते हैं कि हिन्दू राष्ट्र बनने का अर्थ यह नहीं होगा कि मुस्लिमों या ईसाइयों के अधिकार कम हो जाएंगे या उन्हें उसी तरह ट्रीट किया जाएगा, जिस तरह की इस्लामिक राष्ट्र में अल्पसंख्यकों को ट्रीट किया जाता है। नेपाल एक हिन्दू राष्ट्र था, लेकिन

SANGAM LAL GUPTA
Member of Parliament, Lok Sabha
Pratapgarh, Uttar Pradesh
Member
Parliamentary Standing Committee of Education, Women, Children, Youth, Sports
Consultative Committee of Petroleum and Natural Gas
Sainik kalyan Board, Ministry of Defence

सत्यमेव जयते

संगम लाल गुप्ता
सांसद, लोक सभा
प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश
सदस्य
शिक्षा, महिला, बाल, युवा और खेल संबंधी संसदीय स्थाई समिति
पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस संबंधी संसदीय सलाहकार समिति
सैनिक कल्याण बोर्ड, रक्षा मंत्रालय

Ref:MPSLG/12
Date:07/02/2023

माननीय प्रधानमंत्री जी
भारत सरकार, नई दिल्ली।

महोदय,

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ जिसे स्थानीय मान्यता के अनुसार त्रेता युग में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम ने बतौर अयोध्या नरेश श्री लक्ष्मण जी को भेंट दिया था और उसी कारण उसका नाम लखनपुर और लक्ष्मणपुर रखा गया था किंतु कालांतर में 18वीं सदी में नवाब आसफुद्दौला ने उसका नाम परिवर्तित कर लखनऊ रख दिया था और उसी परंपरा में लखनऊ चला रहा है।

यहां यह उल्लेखनीय है कि शानदार सांस्कृतिक विरासत के समृद्ध देश में आज हमारी भावी पीढ़ी को अमृत कालखंड में भी लखनऊ के नवाबों की विलासिता और निकम्मेपन की कहानियां सुनाकर उन्हें गुलामी का संकेत देना बिल्कुल ही अनुचित प्रतीत होता है और निकम्मेपन और विलासिता पूर्ण जीवन शैली के कारण ही लॉर्ड डलहौजी ने अवध का अधिग्रहण कर ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया था और नवाब वाजिद अली शाह ने ब्रिटिश अधीनता स्वीकार कर ली थी।

अतएव जब देश अमृत कालखंड में प्रवेश कर चुका है तो गुलामी और विलासिता के प्रतीक लखनऊ के नाम को परिवर्तित कर भारत के शानदार सांस्कृतिक विरासत, गौरव, समृद्धि, मर्यादा तथा पौरुष के प्रतीक लखनपुर या लक्ष्मणपुर नाम से कराए जाने की कृपा करें।

सधन्यवाद

(संगम लाल गुप्ता)

Delhi Address :- 159, North Avenue, New Delhi-110001, Ph.: 011-23092081, Mob.: 9821876739
पता :- 159, नार्थ एवेन्यू, नई दिल्ली-110001, Email-sangamlal.gupta@sansad.nic.in

वहां पर ईसाइयों और मुस्लिमों को भी बराबरी के अधिकार थे। दरअसल जो लोग हिन्दू राष्ट्र की बात करते हैं उनका मानना है कि ईसाई और मुस्लिम भी हिन्दू ही है। इसका तात्पर्य हिन्दुस्तान में रहने वाले व्यक्तियों से है। जिस तरह भारत में रहने वाला हर व्यक्ति भारतीय है, उसी तरह हिन्दुस्तान में रहने वाला हर व्यक्ति हिन्दू है।

Pulwama anniversary : Police says out of 19 perpetrators, 15 killed or arrested

A senior Jammu and Kashmir police officer on Tuesday said that out of 19 terrorists involved in deadly 2019 Pulwama terrorist attack, 15 have been either killed or arrested.

On this day in 2019 a local suicide bomber Adil Dar of Jaish-e-Mohammad rammed his explosive-laden car into CRPF bus at Lethpora Pulwama leaving 40 personnel of the force dead. The attack was followed by Balakote air strikes. A day later Pakistan attempted a retaliation and it triggered a brief dogfight. The Pulwama attack had brought India and Pakistan at the brink of war.

"Out of 19 terrorists and OGW involved in the Pulwama Attack, 8 have been killed, 7 arrested and 4 including Azhar Masood (JeM chief), Rauf Masood and (Ammar) Alvi who all are based in Pakistan are still alive," Additional Director General of Police, Vijay Kumar told reporters after paying tributes at Lethpora Pulwama to the CRPF men killed in 2019 bombing. Kumar said over the last few years security forces have bro-

PM Modi, Amit Shah, others pay homage to Pulwama martyrs

Prime Minister Narendra Modi on Tuesday paid tributes to martyrs of Pulwama and said the nation can never forget their supreme sacrifice. Taking to twitter, the PM wrote, "Remembering our valorous heroes who we lost on this day in Pulwama." "We will never forget their supreme sacrifice. Their courage motivates us to build a strong and developed India," Modi. Union Home Minister Amit Shah and Defence Minister Rajnath Singh also took to the micro blogging site, and paid homage to the martyrs. "I pay homage to the brave soldiers who laid down their lives in the ghastly terror attack in Pulwama on this day in the year 2019. The nation can never forget their sacrifice," Shah said. "Their valour and indomitable courage will always remain an inspiration in the fight against terrorism," he said. The Defence Minister said , "My tributes to the brave soldiers who sacrificed their lives in the terrorist attack in Pulwama in 2019. The country salutes the courage and sacrifice of these soldiers. The entire country stands firmly with their families." Congress president Mallikarjun Kharge in a tweet wrote, "We bow in reverence to the supreme sacrifice of the Pulwama martyrs. We remember their indomitable valour and courage in the service of the nation. Lest We Forget." Former Congress president and MP Rahul Gandhi in a tweet wrote, "India will always remember their supreme sacrifice."

ken the back of Jaish in Kashmir. He, however, said the Jaish was trying to recruit locals into the organisation and during the last six months they have increased recruitment. "But we will not allow Jaish to flourish here," he said. ADGP Kumar said at present JeM has only 7-8 locals and 5-6 active Pakistanis including Mossa Solaimani who are active in Kulgam district of south Kashmir. Kumar said a total of 37 local militants are presently active, out of them only two are old while rest were new recruits. Inspector General Operations CRPF, MS Bhatia said the situation in Kashmir has shown remarkable improvement compared to the situation since the 2019 Pulwama bombing.

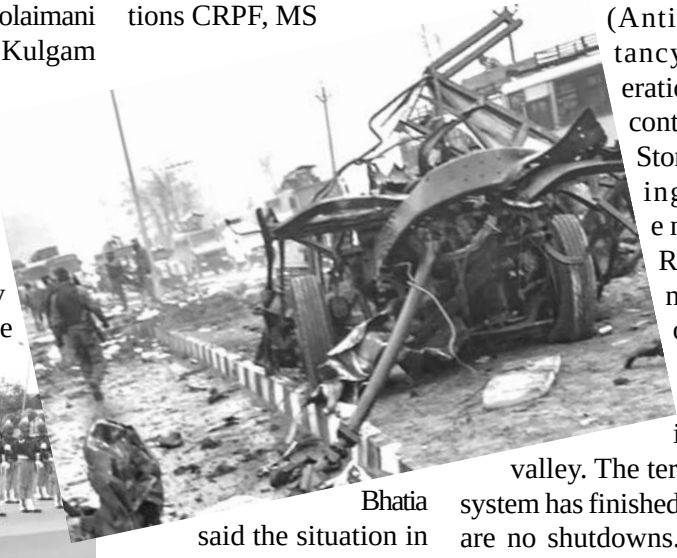

"Situation in Kashmir has improved vastly ... (Anti militancy) Operations are continuing. Stone pelting has ended. Record number of tourists arrived in the valley. The terror eco system has finished. There are no shutdowns. Overall there has been a remarkable improvement in the situation. And security forces are proceeding to wipe out the terrorism from the valley," he said.

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने एक फरवरी को वित्त वर्ष 2023-24 का बजट पेश किया। 2024 में लोकसभा चुनाव से पहले ये मोदी सरकार का आखिरी पूर्ण बजट था। बजट पूर्व ऐसा माना जा रहा था कि सरकार बजट में लोकलुभावन कदम उठाने से बचेगी, क्योंकि उसके सामने वित्तीय अनुशासन बनाए रखने यानी राजकोषीय घाटे को काबू में रखने की बड़ी चुनौती है। हालांकि विशेषज्ञों का मानना है कि कोविड के बाद इकोनॉमी में अब तक की रिकवरी का रिकॉर्ड ज्यादा अच्छा नहीं रहा है। लिहाजा समाज के कमजोर वर्ग को मदद की जरूरत है। कोविड के दो साल बाद दुनिया का एक तिहाई हिस्सा मंदी के मुहाने पर खड़ा है। इस माहौल में 2023 में भारत की अर्थव्यवस्था में तुलनात्मक तौर पर रफ्तार देखने को मिल सकती है। इसे ग्लोबल इकोनॉमी में 'ब्राइट स्पॉट' माना जा रहा है। भारत के इस साल के जीडीपी टारगेट में संशोधन किया गया है फिर भी इसके दुनिया की सबसे तेज रफ्तार वाली अर्थव्यवस्था बने रहने की संभावना है। ऐसा लगातार दूसरा साल होगा। इस साल (2022-23) विकास दर 6 से 6.5 फीसदी रह सकती है, जो हर लिहाज से काफी प्रभावी आंकड़ा है।

पहले अर्थव्यवस्था के चमकदार पहलुओं की बात कर लेते हैं। भारत में पिछले कुछ समय में महंगाई घटी है। पेट्रोल-डीजल और गैस के दाम में बढ़ोतरी की रफ्तार भी थम गई है। विदेशी निवेशकों का निवेश बढ़ा है और उपभोक्ता खर्च में बढ़ोतरी देखने को मिल रही है। भारत को मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर में 'चाइना प्लस वन' स्ट्रैटेजी से फायदा मिलने की उम्मीद है, क्योंकि ऐपल जैसी कंपनियां अपनी मैन्युफैक्चरिंग को डाइवर्सिफाई करने की रणनीति के तहत यहां अपनी मैन्युफैक्चरिंग बढ़ा सकती हैं। दरअसल ऐपल अपनी सप्लाई चेन के लिए चीन पर निर्भरता कम करना चाहती है। इसीलिए वो भारत में अपनी मैन्युफैक्चरिंग को रफ्तार देना चाहती है। लेकिन विशेषज्ञों का मानना है है कि

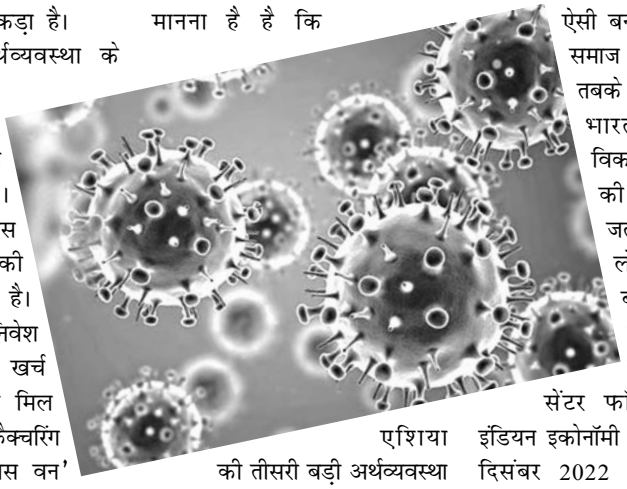

एशिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था भारत को अपनी क्षमताओं में और इजाफा करना होगा। उसे आर्थिक गतिविधियों का दायरा और बढ़ाने की जरूरत है। वही स्विट्जरलैंड के दावोस में हाल में खत्म हुई वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम की बैठकों में अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) की चीफ इकोनॉमिस्ट गीता गोपीनाथ ने दो टूक कहा कि ''राजनेताओं को अपनी राजकोषीय नीति ऐसी बनानी होगी, जिससे समाज के सबसे कमजोर तबके को मदद मिले।'' भारत की आर्थिक विकास दर बेहतर रहने की भले ही संभावना जताई जा रही हो, लेकिन देश में बेरोजगारी दर लगातार ऊंचे स्तर पर बरकरार है। सेंटर फॉर मॉनिटरिंग द इंडियन इकोनॉमी (सीएमआईई) के दिसंबर 2022 के आंकड़ों के मुताबिक शहरों में बेरोजगारी दर बढ़ कर 10 फीसदी से अधिक हो

गई है।

बताते चले कि ब्रिटिश चौरिटी ऑक्सफैम की हालिया रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत के शीर्ष एक फीसदी लोगों के पास देश की संपत्ति का 40 फीसदी है। हालांकि इसके आंकड़ों पर सवाल उठाए जा रहे हैं। कहा जा रहा है कि ऑक्सफैम के गणना करने के तरीकों में खामियां हैं। लेकिन कई ऐसे आंकड़े हैं, जिनसे पता चलता है कि सस्ते मकानों की मांग घट रही है। टू-व्हीलर की तुलना में लग्जरी कारों की बिक्री बढ़ रही है। सस्ते सामानों की तुलना में प्रीमियम कंज्यूमर सामानों की सेल बढ़ी है। ये महामारी के बाद अंग्रेजी के के. शेप्ड रिकवरी का संकेत दे रही है। के. शेप्ड रिकवरी का मतलब है अमीर और अमीर होते जा रहे हैं और गरीब और गरीब। देश के विशाल और सुदूर ग्रामीण इलाकों में लोगों का आर्थिक संकट बढ़ता जा रहा है। वे परेशान दिख रहे हैं। गौरतलब है कि बीबीसी ने हाल में पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिले के कई गांवों का दौरा किया था। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक यहां केंद्र और राज्य के बीच राजनीतिक झगड़े की वजह से मनरेगा के तहत मिलने वाले काम की मजदूरी का भुगतान एक साल से भी अधिक वक्त से पीछे चल रहा है। यहां रहने वाली सुंदर और उनके पति आदित्य सरदार ने मनरेगा के तहत चार महीने तक एक तालाब खोदा था। इन लोगों ने बीबीसी को बताया कि खाने-पीने की चीजें जुटाने के लिए उन्होंने कर्ज लिया है। मजदूरी देरी

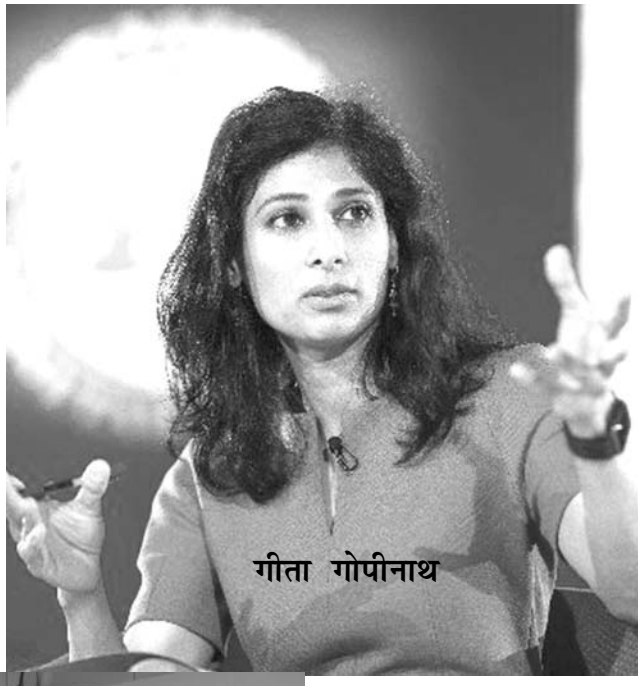

गीता गोपीनाथ

से मिलने का नतीजा ये हुआ कि उन्हें अपने बेटे को स्कूल से निकालना पड़ा। इस इलाके के कई आदिवासी गांवों में हमने परेशानियों की ऐसी ही कहानियां सुनीं। सामाजिक कार्यकर्ता निखिल डे ने बीबीसी से कहा कि केंद्र सरकार ने पश्चिम बंगाल में एक करोड़ कामगारों का मनरेगा का पेमेंट एक साल से रोक रखा है। आर्थिक बदहाली और भारी बेरोजगारी के इस दौर में ये अमानवीय है। देरी से मजदूरी का भुगतान करने से जुड़े एक केस में सुप्रीम कोर्ट ने इसे बंधुआ मजदूरी करार दिया है। मनरेगा की मजदूरी में ये देरी का मामला सिर्फ पश्चिम बंगाल तक ही सीमित नहीं है। पूरे देश में इस तरह की समस्या है। केंद्र सरकार को पूरे

देश के मनरेगा मजदूरों को अभी भी 4100 करोड़ रुपये देने हैं। अर्थशास्त्री ज्यां द्रेज कहते हैं कि केंद्र सरकार सामाजिक सुरक्षा की स्कीमों में खर्च घटाना चाहती है। लिहाजा मनरेगा की मजदूरी बकाया जैसी समस्याएं पैदा हो रही हैं। द्रेज कहते हैं कि एक वक्त था जब मनरेगा में काम देने के लिए जीडीपी के एक फीसदी तक खर्च बढ़ाया गया था, लेकिन अब ये घट कर एक फीसदी से भी कम रह गया है। अगर इस बार के बजट में इसे फिर बढ़ा कर एक फीसदी कर दिया जाए तो मुझे बड़ी खुशी होगी। इसके साथ ही इस स्कीम में भ्रष्टाचार के लिए और ज्यादा कोशिश करनी होगी। मोदी सरकार ने मनरेगा के तहत गांवों में मिलने वाले रोजगार के लिए किया जाने वाला खर्च घटा दिया है। इसके साथ ही खाद्य और फर्टिलाइजर सब्सिडी में भी खर्च का प्रावधान घटाया गया है। हालांकि कोविड के समय शुरू की गई आपात सहायता स्कीमों और ग्लोबल जियोपॉलिटिक्स से लगे झटकों को कम करने के लिए पूरक आवंटन बढ़ाया गया है।

गौरतलब हो कि मोदी सरकार के कार्यकाल में राजकोषीय संतुलन बिगड़ा हुआ है। लिहाजा निर्मला सीतारमण का काम कठिन हो गया है। बजट पेश से पूर्व ऐसा माना जा रहा था कि सामाजिक सुरक्षा स्कीमों को प्राथमिकता देने और आर्थिक विकास की रफ्तार तेज करने वाले पूंजीगत खर्चों को बढ़ाने के बीच निर्मला सीतारमण को संतुलन कायम करना होगा। उन्हें राजकोषीय घाटा कम करने की कोशिश करनी होगी। भारत का बजटीय राजकोषीय घाटा 6.4 फीसदी है। पिछले दशक में ये औसतन 4 से 4.5 फीसदी हुआ करता था। पिछले चार साल में मोदी सरकार का कर्ज दोगुना बढ़ा है। रॉयटर्स की इकोनॉमिस्ट पोल में कहा गया है कि सरकार

खाद्य और उर्वरक सब्सिडी एक चौथाई घटा सकती है। सरकार ने कोविड में बांटे जाने वाले मुफ्त राशन को खत्म कर दिया है। इसके साथ ही चालू खाते का घाटा भी बढ़ता जा रहा है। यह देश के निर्यात और आयात का अंतर होता है। यानी निर्यात से कमाई की तुलना में आयात का खर्चा बढ़ रहा है। यह भी सरकार के लिए चिंता का विषय बना हुआ है। डीबीएस ग्रुप रिसर्च की एक रिपोर्ट में चीफ इकोनॉमिस्ट तैमूर बेग और डेटा एनालिस्ट डेजी शर्मा ने कहा है कि भारतीय अर्थव्यवस्था इस वक्त बाहरी मांग, विदेशी निवेशक के सेंटिमेंट और क्षेत्रीय व्यापार के बदलते रुख से प्रभावित है। चूंकि पश्चिमी देश मंदी के दौर में पहुंच गए हैं, इसलिए भारतीय निर्यात पर इसका असर पड़ सकता है। घरेलू मोर्चे पर वित्तीय हालात ज्यादा अच्छे नहीं हैं। लिहाजा घरेलू अर्थव्यवस्था में मांग ज्यादा बढ़ती नहीं दिखती। आरबीआई फरवरी में ब्याज दरें बढ़ा सकता है। हालांकि अगले एक साल तक इस पर रोक लगने की उम्मीद है। मोदी सरकार के सामने इस वक्त कड़ी आर्थिक चुनौतियां हैं। भले ही भारतीय अर्थव्यवस्था ने दुनिया की दूसरी अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में बढ़िया प्रदर्शन किया हो। सरकार को भारतीय अर्थव्यवस्था में लगातार ढांचागत सुधारों पर जोर देना होगा। बजट के इतर भी उसे इसके लिए एलान करने होंगे ताकि

सरकार के पास लगातार कम हो रहे पैसे का अधिकतम इस्तेमाल हो सके।

बहरहाल, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा है कि गरीबों को मुफ्त चावल-गेंहू बाँटे जाने का काम सरकार 2024 तक जारी रखेगी। 1 फरवरी को पेश हुए बजट के मुताबिक सरकार इस पर दो लाख करोड़ रूपए खर्च करेगी, जिसे निर्मला सीतारमण ने बजट भाषण के दौरान एक ऐसा भारत बनाने की कोशिश का हिस्सा बताया जिसमें सभी खुशहाल हों और सबकी हिस्सेदारी हो। गरीबी रेखा से नीचे के लोगों को मुफ्त राशन देने की योजना केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार ने साल 2020 में शुरू की थी जब कोविड के कारण लोगों के रोजी-रोजगार पर भारी असर पड़ा था। अब तक के आंकड़ों के मुताबिक इस पर पौने चार लाख करोड़ खर्च हो चुके हैं। बजट भाषण में भारतीय वित्त मंत्री ने कहा कि एक साल में सरकार दो लाख करोड़ रूपए खर्च करेगी। पहले इस कार्यक्रम को दिसंबर 2022 में ही खत्म होना था। वित मंत्रालय में सलाहकार रह चुके मोहन गुरुस्वामी कहते हैं कि मुफ्त राशन बाँटे जाने को दो तरह से देखा जा सकता है- पहली तो ये इस दावे की पोल खोलता है कि अर्थव्यवस्था बेहतर हालत में पहुंच गई है और दूसरा ये कि चुनाव जब सामने आता है तो सरकारें उन योजनाओं के ऐलान करने लगती है जिन्हें अर्थशास्त्री पोपुलिस्ट या लोकलुभावन कहते हैं। दिलचस्प बात ये भी है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी राज्य सरकारों को आगाह कर चुके हैं कि वे 'रेवड़ियाँ बाँटने की आदत' से बाज आएँ, कई राज्य सरकारों ने इस

टिप्पणी पर आपत्ति की थी। इसी मामले में दायर की गई एक जनहित याचिका सुप्रीम कोर्ट में विचाराधीन है, जिसमें सुप्रीम कोर्ट संभवत: यह बता सकती है कि किन योजनाओं को लोक कल्याणकारी और किन योजनाओं को रेवड़ी माना जाना चाहिए। वही दूसरी तरफ इस साल देश के 9 राज्यों में चुनाव होने हैं। पूर्वोत्तर भारत के 3 राज्यों-त्रिपुरा, नगालैंड और मेघालय में विधानसभा चुनावों की घोषणा हो चुकी है। अगले साल आम चुनाव भी होने हैं, जिसमें नरेंद्र मोदी तीसरी बार सरकार बनाने के लिए जनता से वोट माँगेंगे। त्रिपुरा में भारतीय जनता पार्टी की सरकार है। दक्षिण भारतीय राज्य कर्नाटक में भी जहां इसी साल नई सरकार चुनने के लिए वोट डाले जाएँगे, वहाँ भी बीजेपी सत्ता में है। कर्नाटक के सूखे इलाकों के लिए पांच हजार तीन सौ करोड़ रूपयों की एक योजना का ऐलान भी वित्त मंत्री के बजट में था। इस साल दो बड़े राज्यों, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में भी चुनाव होने वाले हैं, इन दोनों राज्यों में कांग्रेस की सरकार है। भोजन के अधिकार के लिए काम करने वाले निखिल डे कहते हैं कि बीच में इस तरह की खबरें थीं कि मुफ्त राशन स्कीम को दिसंबर से आगे नहीं बढ़ाया जाएगा जिसे लेकर एक बड़े वर्ग में बेहद नाराजगी थी। वही कोविड के बीच में हुए उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों में पार्टी की जीत के लिए, जिसके बाद बीजेपी की प्रदेश में दोबारा सरकार बनी, मुफ्त राशन योजना को काफी हद तक श्रेय दिया गया था, जिसकी वजह से बेहद गरीब लोगों को राहत

मिली थी। हालांकि पश्चिम बंगाल का चुनाव, जो महामारी के बीच ही हुआ, वहां बीजेपी सरकार बनाने के प्रयास से बहुत दूर रही थी। राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि यूपी में बीजेपी की जीत में लाभार्थियों का बड़ा योगदान रहा था। सरकार की कल्याणकारी योजनाओं का लाभ लेने वालों को लाभार्थी कहा जाता है। निर्मला सीतारमण ने अपने बजट को 'अमृत काल का पहला बजट' करार दिया। इस बात का खास तौर पर जिक्र किया कि 'वैश्विक अर्थव्यवस्था में सुस्ती के बीच भारत एक चमकते हुए सितारे की तरह है।' मोहन गुरुस्वामी कहते हैं कि इसमें कोई शक नहीं कि अर्थव्यवस्था महामारी की स्थिति से बाहर आ रही है और पहले से बेहतर हालत में है लेकिन सवाल ये भी है कि क्या जो सुधार हो रहा है उसमें सबकी हिस्सेदारी है? सरकार ने कहा है कि कोविड-19 महामारी के बीच अस्सी करोड़ लोगों को 28 महीनों तक मुफ्त राशन बाँटा गया। मोहन गुरुस्वामी कहते हैं कि चुनाव के पहले मन को लुभाने वाली स्कीमों और अर्थव्यवस्था (जीडीपी) के बेहतर होने की बात नई नहीं है और साल 1961 से सभी सरकारें करती रही हैं। निर्मला सीतारमण ने ये कहा है कि इस वित्तीय वर्ष में बजट घाटा 6.4 प्रतिशत रहेगा। पेश किए गए आर्थिक सर्वेक्षण में सरकार ने बढ़ोतरी की दर को 6 से 6.8 प्रतिशत रहने की बात कही है। मगर सरकार के आर्थिक सलाहकार ने एनडीटीवी को दिए गए एक साक्षात्कार में माना है कि अर्थव्यवस्था में बढ़ोतरी छह फीसद से भी कम हो। आर्थिक सर्वेक्षण में ये भी कहा गया है कि बढ़ोतरी का अनुमान विश्व में मौजूद हालात पर भी निर्भर करेगा।

गौरतलब हो कि रूस-यूक्रेन की जंग ने, जिसके कारण कच्चे तेल, गैस, अनाज, तेल के दाम दुनियां में बेहद तेज हो गए हैं। पूरे अमेरिका और यूरोप

क ा` प्रभावित किया है, जिसके कारण मंहगाई तेजी से बढ़ी है। मंहगाई को रोकने के लिए अमेरिका की सेंट्रल बैंक ने ब्याज दर बढ़ाया तो विदेशी कंपनियां भारत जैसे देशों से निवेश लेकर वहां लौटने लगीं क्योंकि उन्हें वहाँ बेहतर रिटर्न मिलने की गुंजाइश दिखने लगी। चीन में कोविड का प्रकोप समाप्त होने का नाम नहीं ले रहा है। सरकार ने हालांकि देश में निर्माण को बढ़ाने के मकसद से मूलभूत सुविधाओं के निर्माण के लिए होने वाले खर्च को 33 प्रतिशत बढ़ा दिया है जो कि जीडीपी का 3.3 प्रतिशत है। वित्त मंत्री की इस घोषणा के समय सदन में मोदी-मोदी के नारे गूंजने लगे। इस कदम से सीमेंट, लोहे, स्टील और दूसरे सामानों की मांग बढ़ेगी, रोजगार के अवसर भी ये खोलेगा, लेकिन इन कामों का नतीजा दिखने में समय लगेगा, क्योंकि बड़ा पुल या सड़क तैयार होने में वक्त लगता है। सरकार ने मुफ्त राशन स्कीम को जारी रखने के साथ ही प्रधानमंत्री आवास योजना के बजट को भी 66 प्रतिशत बढ़ाकर 79,000 करोड़ रूपए कर दिया है। खेती के लिए कर्ज, पशुपालन, डेयरी और मतस्य पालन को बढ़ावा देने की स्कीम भी बजट का हिस्सा है। इसके अलावा, महिलाओं और बुजुर्गों के लिए भी खास प्रावधान किए गए हैं, महिला सम्मान बचत पत्र के तहत उन्हें अपना जमा धन पर दूसरे खातों के मुकाबले अधिक ब्याज मिलेगा। जाने-माने पत्रकार और टीवी एंकर राजदीप सरदेसाई ने एक ट्वीट करके पूछा कि सरकार नई स्कीमों के ऐलान करती रहती है मगर साथ ही इस बात का भी जरिया होना चाहिए कि पहले घोषित की गई योजनाओं का लेखा-जोखा दिया जाए।

● **Sandeep Singh Sisodiya**

India, one of the fastest-growing economies in the world, is facing numerous environmental threats that pose a risk to both the natural environment and human well-being. From deforestation and water scarcity to air and plastic pollution, the country is grappling with multiple challenges that need immediate attention and action.

In this article, we will delve into the top 10 environmental threats facing India and take a closer look at the highlights from environmental surveys conducted over the last 5 years.

The top 10 environmental threats in India are deforestation, water scarcity, air pollution, plastic pollution, climate change, soil degradation, waste management, biodiversity loss, chemical pollution, and overfishing. Deforestation continues to be a major concern, with India losing valuable forest cover due to urbanization and industrialization. The country is also facing a fresh water crisis, with sinking groundwater levels leading to water scarcity in many regions. Air pollution is choking many Indian cities, with a 20% increase in air pollution levels over the last 5 years. A steep rise in Plastic pollution makes thing worse, with India generating over 15,000 tons of plastic waste daily. The impacts of climate change are already being felt in India, with crop yields declining by 5% over the last 5 years. Soil degradation, due to the extreme infusion of chemical fertiliz-

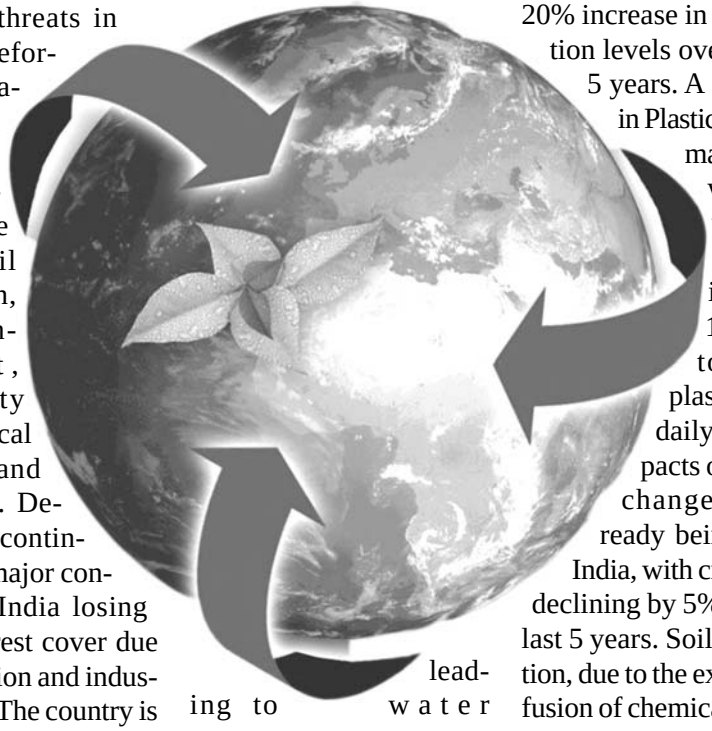

ers and pesticides for commercial purpose has sliced acres of fertile land. India also faces a daunting task in managing its waste, with a lack of proper disposal facilities leading to pollution of land and water bodies.

The country's rich biodiversity is under threat from habitat destruction, over-exploitation of resources, and climate change. Finally, overfishing is leading to the decline in fish populations and loss of livelihoods for fishing communities.

✯ **5 highlights from Indian environmental surveys over the last 5 years :-**

☞ Forest cover in India increased by 1% from 2015 to 2020, but deforestation still continues unabated in many regions.

☞ Groundwater levels in India have declined by about 10% over the last 5 years, leading to water scarcity in many regions.

☞ Air pollution in Indian cities has increased by 20% over the last 5 years, leading to serious health impacts.

☞ Plastic pollution in India's oceans and rivers has increased by 30% over the last 5 years.

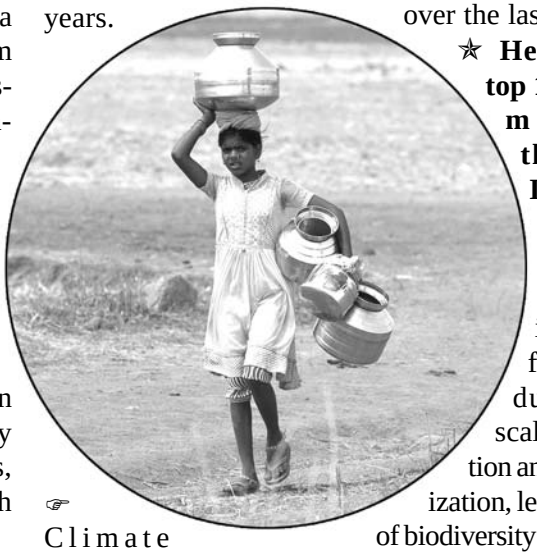

☞ Climate change is already having adverse effect on Indian agriculture, with crop yields declining by 5% over the last 5 years.

✯ **Here are the top 10 environmental threats in India :-**

☞ **Deforestation :** India is facing rapid deforestation due to large scale urbanization and industrialization, leading to loss of biodiversity and soil erosion.

☞ **Water Scarcity :** The country is reeling under a fresh water crisis with sinking groundwater levels, leading to water scarcity in many regions.

☞ **Air Pollution :** India has some of the world's most polluted cities due to vehicular emissions, industrial pollution and burning of crop residue.

☞ **Plastic Pollution :** India generates over 15,000 tons of plastic waste on daily basis, The pollution

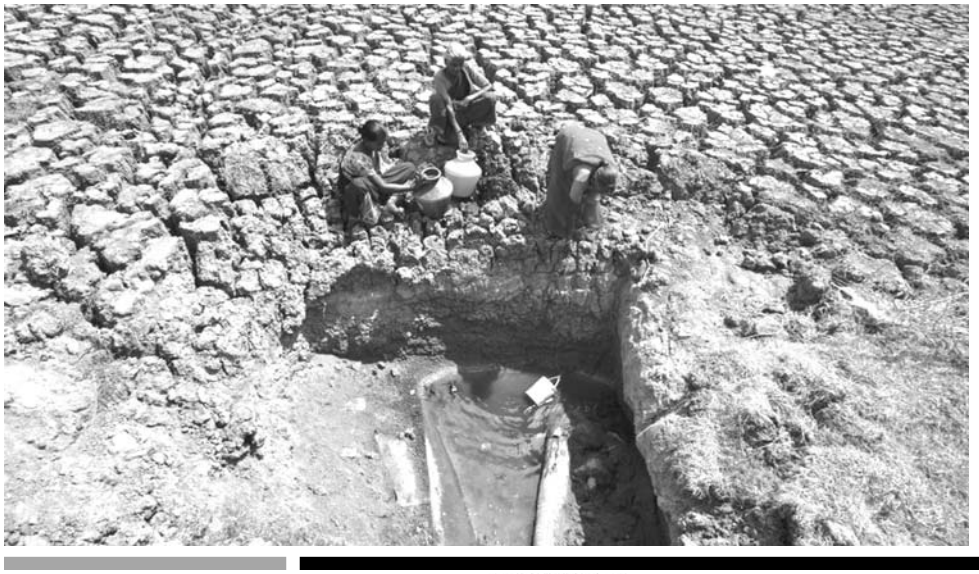

ultimately ends up contaminating oceans and rivers.

☞ **Climate Change :** India is one of the most vulnerable countries to the impacts of climate change, including sea level rise, increased frequency of extreme weather events, and declining agricultural productivity.

☞ **Soil Degradation :** Extreme use of chemical fertilizers and pesticides is leading to soil degradation and loss of fertile land.

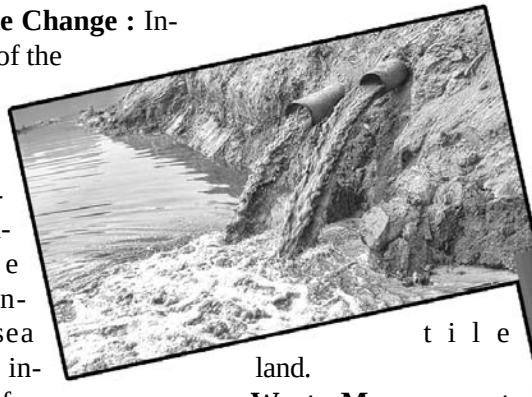

☞ **Waste Management :** India faces a major challenge in managing its waste, with a lack of proper disposal facilities leading to pollution of land and water bodies.

☞ **Biodiversity Loss :** The country is home to a rich biodiversity, but habitat destruction, over-exploitation of resources, and climate change leaves species jostling for survival.

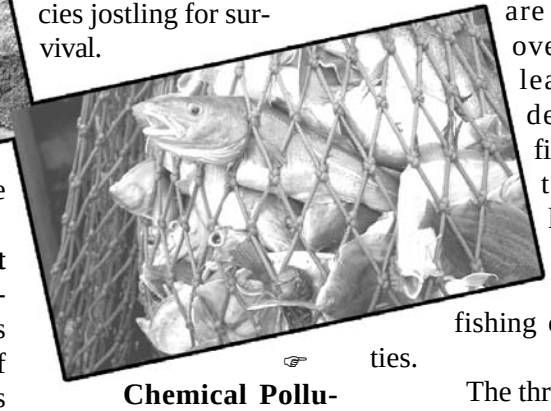

☞ **Chemical Pollution :** India's rapid industrialization has led to widespread chemical pollution of air, water, and soil, affecting human health and the environment.

☞ **Overfishing :** India's coastal waters are facing overfishing, leading to decline in fish populations and loss of livelihoods for fishing communities.

The threats to environment being faced by India are complex and far-reaching, which require a multi-pronged approach to mitigate and address them. From policymakers to individuals, everyone has a role to play in safeguarding the natural environment and ensuring a sustainable future. India must take immediate action to address these threats to achieve sustainable development to ensure a healthy and prosperous future for all.

मध्यप्रदेश विधानसभा में AAP डाल सकती है सेंध?

कांग्रेस-बीजेपी में सीधी टक्कर

कुछ ही महीनों में मध्य प्रदेश में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। राज्य में कांग्रेस और भाजपा में सीधी टक्कर रहती है। दोनों ही पार्टियों ने अपनी रणनीति को धार देना शुरु कर दिया है। आम आदमी पार्टी भी राज्य में अपनी मौजूदगी दर्ज करवाने में जुट गई है। यहाँ भी उसका चुनावी दंगल गुजरात की तर्ज पर सजता हुआ दिख रहा है। पिछले विधान सभा चुनाव में बीजेपी हार गयी थी। कांग्रेस ने कुछ छोटे दलों और निर्दलीय विधायकों के साथ मिलकर सरकार बनाई थी। लेकिन कुछ दिनों बाद कांग्रेस के ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कांग्रेस से हाथ छुड़ा लिया और अपने समर्थक विधायकों के साथ भारतीय जनता पार्टी का दामन थाम लिया। कमलनाथ के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार गिर गई और सत्ता की कुंजी एक बार फिर शिवराज सिंह चौहान के हाथों में आ गयी थी। अब बीजेपी और कांग्रेस को आगामी चुनावों में किन चुनौतियां का सामना करना पड़ सकता है और क्या आम आदमी पार्टी भी मध्य प्रदेश के चुनावों में अपनी छाप छोड़ सकती है या आप का हाल गुजरात जैसा ही होगा। ये तमाम सवाल पर बारिकी से मंथन करने होंगे।

गौरतलब है कि 24 जनवरी को राज्य कार्यकारिणी की बैठक में भारतीय जनता पार्टी के नेताओं ने काफी मंथन किया और इसी दौरान प्रदेश अध्यक्ष विष्णु दत्त शर्मा ने विधानसभा के चुनावों के लिए 200 दिनों की कार्ययोजना बनाने की घोषणा की। मध्य प्रदेश के प्रभारी मुरलीधर राव ने 200 दिनों की कार्य योजना पर विस्तार से बताते हुए कहा कि 200 दिनों में 200 सीटें हासिल करने का लक्ष्य प्रदेश के संगठन, नेताओं, विधायकों, सांसदों और मंत्रियों के सामने है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि उनके पास उन नेताओं की फाइल मौजूद है जो पिछले चुनावों में पार्टी के उम्मीदवार के साथ घूमे जरूर थे मगर उन्होंने पार्टी के खिलाफ काम किया। शिवराज के

अनुसार उसकी वजह से कई उम्मीदवारों को हार का सामना करना पड़ा था। उन्होंने इस दौरान भितरघात जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया। पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती कार्यसमिति की बैठक से कुछ ही देर में अचानक निकल पड़ीं। बाद में उन्होंने ट्वीट किया कि 'लगता है मध्य प्रदेश में 2018 का माहौल आ गया है, जब हमारे जैसे लोगों को लेकर झूठी बातें फैलाई जाती थीं।' लेकिन जिस बात को लेकर संगठन के अंदरूनी हलकों में हलचल मची वो है उनके आरोप कि संगठन में 'डर्टी ट्रिक्स डिपार्टमेंट' काम कर रहा है। उन्होंने लिखा कि सोशल मीडिया पर जानबूझकर फैलाया जा रहा है कि मैं बिना बुलाए कार्यसमिति में गई, मैं 'डर्टी ट्रिक्स डिपार्टमेंट' को आगाह करूंगी कि ऐसी झूठी बातें फैलाने से भाजपा को दुश्मनों की जरूरत ही नहीं पड़ेगी। भोपाल में वरिष्ठ राजनीतिक टिप्पणीकार गिरिजा शंकर ने कहा कि जो बीजेपी के खिलाफ सत्ता विरोधी लहर थी वो 2018 में खत्म भी हो गयी थी, जब भाजपा

को हार का सामना करना पड़ा था। इस बार चुनावी मुद्दों पर नहीं बल्कि अस्मिता और भावनाओं पर लड़ा जाएगा। क्योंकि इस बार सभी के पास मुद्दों की कमी है और सारा दारोमदार उम्मीदवारों के चयन पर ही होगा। भाजपा का नेतृत्व कमजोर नहीं है क्योंकि शिवराज सिंह चौहान पार्टी के सर्वमान्य चेहरा रहे हैं। उम्मीदवारों का सही तरीके से चयन नहीं कर पाने की वजह से भाजपा को पिछली बार करीब 30 सीटों का नुकसान उठाना पड़ा था। लेकिन बीजेपी के वरिष्ठ नेता और प्रवक्ता लोकेन्द्र पराशर, गिरिजा शंकर की बातों से सहमत नहीं हैं। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार ने जो जन कल्याण की योजनायें लागू की हैं उनकी वजह से लोगों को काफी राहत मिली है। पराशर कहते हैं कि चाहे आयुष्मान कार्ड हो या आवास योजना। लोगों के बीच ये बहुत लोकप्रिय योजनायें रहीं हैं। पहले भूमिहीनों के लिए आवास योजना में पेंच था कि मकान कहाँ बनाकर दिया जाए। अब सरकार भूमि भी दे रही है। उसी तरह पेसा कानून के लागू होने से 87 प्रखंडों में जहां आदिवासियों की संख्या 95 प्रतिशत के आसपास है, उन्हें सीधा लाभ मिलेगा और जल जंगल और जमीन पर उनका अधिकार स्थापित होगा। जहाँ तक बात है भितरघात करने वालों की तो पराशर का दावा है कि कई ऐसे नेताओं पर पहले ही कार्यवाई की जा चुकी है। लेकिन भाजपा के गलियारों से ही संकेत मिलने लगे हैं कि संगठन कुछ वैसा ही कर सकता है जैसा गुजरात में किया था। यानी कई ऐसे विधायक हैं जिनको इस बार शायद पार्टी का टिकट ना मिल पाए और नए चेहरों को जगह दी जाए। बहरहाल, कांग्रेस भी चुनाव की तैयारियों में जुटी है। मध्य प्रदेश में कांग्रेस ने सबसे पहले अपनी युवा इकाई म

सुधार किया और राज्य की पूरी कार्यकारिणी को ही बदल डाला। कई पार्टी नेताओं को 'कारण बताओ नोटिस' भी जारी किये गए हैं और जिले की इकाइयों का भी पुनर्गठन भी किया। चुनौतियां कांग्रेस के लिए भी कम नहीं हैं, लेकिन प्रदेश कांग्रेस के मीडिया प्रभारी पीयूष बाबेल का कहना है कि पिछली बार कांग्रेस को जनादेश मिला था लेकिन बीजेपी ने डेढ़ साल कांग्रेस की सरकार गिरा दी थी। उन्हें लगता है कि इसका फायदा कांग्रेस को होगा। इसकी वजह से भाजपा के खिलाफ जो लोगों में आक्रोश था वो बढ़ गया है। लोगों ने कांग्रेस को जितवाया था। मगर सरकार को जोड़ तोड़ कर गिरा दिया गया। पीयूष बाबेल कहते हैं कि पूरे प्रदेश में आन्दोलनों का दौर चल रहा है और बिजली कर्मचारी से लेकर आशा कार्यकर्ताओं तक को आंदोलन करना पड़ रहा है। लेकिन गिरिजा शंकर को लगता है कि कमलनाथ अभी भी प्रदेश की राजनीति से पूरी तरह से वाकिफ नहीं हो पाए ह । उनके अनुसार मध्य प्रदेश में कांग्रेस का प्रदर्शन इस बात पर निर्भर करेगा कि दोनों पूर्व मुख्यमंत्री यानी कमलनाथ और दिग्विजय सिंह का आपस में तालमेल कैसा होगा। एक अन्य वरिष्ठ पत्रकार एन.के. सिंह मानते हैं कि इस बार भी कांग्रेस को सत्ता विरोधी लहर का फायदा मिल सकता है। उनके अनुसार सरकार में जो चेहरे हैं वो दशकों से

चले आ रहे हैं जिसकी वजह से लोग बदलाव भी ढूंढ सकते हैं। लेकिन कांग्रेस को कई दिक्कतों से भी निपटना है। एन.के. सिंह कहते हैं कि कई ऐसे नेता हैं जिनसे पार्टी ने किनाराकशी कर रखी है या उन्होंने खुद पार्टी से किनाराकशी कर ली है। विपक्ष के नेता की राजनीतिक लाइन साफ तौर पर अलग दिखती है और कमलनाथ की अलग। कांग्रेस के लिए संघर्ष करने वाले चेहरों में से एक अरुण यादव भी किनारे पर ही नजर आ रहे हैं जबकि वो प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष रह चुके हैं। उसी तरह अर्जुन सिंह के पुत्र अजय सिंह भी कई चुनाव हारने के बाद घर बैठ गए हैं। एन.के. सिंह कहते हैं कि 2018 के चुनाव में जनता ने कांग्रेस के पक्ष में वोट कम और भाजपा के विरोध में वोट ज्यादा दिए थे।

ज्ञात हो कि राजधानी दिल्ली के तख्त पर बैठकर देश की राजनीति में पांव पसार रही आम आदमी पार्टी, देश के लगभग प्रदेशों में चुनाव लड़ रही है। दिल्ली के बाद पंजाब में अपनी सरकार बनाकर गुजरात के चुनाव में भी अपनी दावेदारी ठोकी थी, हालांकि सफलता कुछ खास हाथ नहीं लगी किन्तु अपने दमखम को जरूर प्रस्तुत किया था। अब आम आदमी पार्टी ने मध्य प्रदेश की सभी 230 सीटों पर उम्मीदवार उतारने की घोषणा की है और अगले 200 दिनों तक पार्टी अपने संगठन को मजबूत करने से लेकर तगड़े उम्मीदवारों को मैदान में उतारने के लिए योजनाबद्ध तरीके से काम कर रही है। आम आदमी पार्टी ने मध्य प्रदेश की राजनीति में नगरीय निकाय और पंचायत के चुनावों के माध्यम से 'एंट्री' ली। फिलहाल प्रदेश में उसके 52 पार्षद हैं और सिंगरौली से एक महापौर। इन चुनावों में आम आदमी पार्टी को छह प्रतिशत वोट मिलने से राजनीतिक विश्लेषक भी हैरानी में हैं। इतना ही नहीं आम आदमी पार्टी के समर्थन वाले लगभग 118 सरपंचों, 10 जिला पंचायत और 27 जनपद के सदस्यों ने भी चुनाव जीता है। इसलिए अब पार्टी ने विधानसभा की तरफ अपनी निगाहें टिका दी है। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष पंकज सिंह ने दावा किया कि फिलहाल प्रदेश में उनके 3।5 लाख वॉलंटियर हैं और वो राज्य भर के 66 हजार बूथों तक अपना संगठन मजबूत करने का अभियान चला रहे हैं। आप के पंकज सिंह

कहते हैं कि मध्य प्रदेश के लोग भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस की राजनीति से ऊब चुके हैं। इसलिए आम आदमी पार्टी उनके लिए नया विकल्प है, जो हम लोगों को बता रहे हैं। हम उन्हें दिल्ली और पंजाब का उदहारण भी दे रहे हैं। लोगों की तरफ से भी हमें अच्छा रिस्पॉन्स मिल रहा है। वरिष्ठ पत्रकार एन.के. सिंह मानते हैं कि अभी आम आदमी पार्टी का विधान सभा के चुनावों में उतना प्रभाव पड़ता दिख नहीं रहा है। उनको लगता है कि कुछ सीटों पर आम आदमी पार्टी उम्मीदवार कांग्रेस के लिए ही परेशानी खड़ी कर सकते हैं, जैसे गुजरात में हुआ था।

तुर्किए पर मौत का साया भारत मदद को आगे आया

6 फरवरी 2023 को सीरिया और तुर्की की सीमा पर 7.8 की तीव्रता के भूकम्प के झटके अनुभव किए गए। इसका केन्द्र अपेक्षाकृत उथला, निकटतम 18 किलोमीटर नीचे था, जिसके कारण से भूमि पर खड़ी इमारतों को गम्भीर क्षति पहुंचा और अपने पीछे विनाश छोड़ गया है। हजारों लोंगो की जान गई है और असंख्य इमारतें धराशायी हो गई हैं। दर्जनों कस्बे और शहर वीरान हो गए हैं। ऐसा ही एक शहर है कहरामनमरास। ये शहर भूकंप के दोनों झटकों के केंद्र के करीब स्थित है। इस शहर की आसमान से ली गई तस्वीरों से तबाही का अंदाजा लगाया जा सकता है। सैटेलाइट तस्वीरों, फोटो और ड्रोन फुटेज के सहारे इस शहर के एक इलाके में हुए विनाश का जायजा लिया गया है। इससे पता चलता है कि शहर के सुबात स्टेडियम के आस-पास कैसे इमारतें समतल हो गई हैं। भूकंप के बाद ली गई सैटेलाइट तस्वीरों में स्टेडियम वाला इलाका टेंटों में बसा दिख रहा है। ये स्टेडियम कहरामनमरासपोस फुटबॉल क्लब का होम ग्राउंड है। लेकिन अब स्टेडियम में 200 टेंट लगे हुए हैं। हर टेंट में एक परिवार है। किसी टेंट में दो परिवार भी रह रहे हैं। स्टेडियम के पास स्थित गाजी

स्कूल अब भी खड़ा है लेकिन उसे काफी नुकसान हुआ है। स्कूल के करीब दो अपार्टमेंट्स पूरी तरह तबाह हो गए हैं। एक आम सुबह इस स्कूल में 2,000 छात्र पढ़ने आते थे। लेकिन 6 फरवरी को पहले भूकंप के बाद तुर्की के सारे स्कूल बंद कर दिए गए। जब आप शहर के कुदुसी बाबा बूलेवार्ड से आम तौर पर व्यस्त रहने वाले अजरबैजान रोड की तरफ मुड़ते हैं तो तबाही की भयावह तस्वीर सामने आना शुरू होती है। भूकंप के दिन से

पहले ये सड़क अपनी भव्य दुकानों और खाने-पीने की जगहों के लिए विख्यात थी। कई दुकानों के ऊपर बहुंमजिला अपार्टमेंट्स भी थे। अब सब कंक्रीट का ढेर बन कर रह गया है। तबाह हुई इमारतों से जब आप स्डेटिडम की ओर देखते हैं तो आपको प्राइवेट सुलार अस्पताल दिखता है। अस्पताल को क्षति हुई है पर पूरी तरह से गिरने से बच गया है। लेकिन इसके बगल में मौजूद सहरा होटल पूरी तरह से समतल हो चुका है। तुर्की के राष्ट्रपति रेचेप तैय्यप अर्दोआन स्डेटिडम में बसे टेंटों के शहर में पहुँचे थे। वे वहां पीड़ितों से मिले और सरकार के राहत कार्यों की तारीफ की। लेकिन लोग आलोचना कर रहे हैं कि मदद मिलने में देर हो रही है। अर्दोआन ने कहा कि एयरपोर्ट्स और सड़कों पर थोड़ी दिक्कतें हैं पर हालात बेहतर हो रहे हैं, हमने संसाधन जुटा लिए हैं और सरकार बढ़िया काम कर रही है। ये अभी साफ नहीं है कि इस शहर में कितने लोगों की मौत हुई है। तब से लेकर अब तक मृतकों की संख्या में कई गुना बढ़ोतरी हुई है। सुबात स्टेडियम में लोग टेंटों में रह रहे हैं, लेकिन तुर्की और सीरिया में हजारों लोग बेघरबार हो चुके हैं। भूकंप के बाद तुर्किए में तबाही का मंजर है। वही भूंकप से बचे लोगों के लिए भारत मददगार बना हुआ है। भारत की इस सहायता का तुर्किए ने धन्यवाद किया है। भारत में तुर्किए के राजदूत फिरत सुनेल ने भारत को उनके देश में राहत सामग्री भेजने के लिए धन्यवाद दिया। फिरत सुनेल ने अपने ट्वीट में लिखा-'भारत की ओर से राहत सामग्री का एक और खेप पहुंचने वाला है। तुर्किश एयरलांइस भूकंप प्रभावित इलाकों में रोज

तुर्की में किस महीने रहता है भूकंप का सबसे ज्यादा खतरा

जनवरी	–	05 भूकंप	मई	–	09 भूकंप	सितंबर	–	07 भूकंप.
फरवरी	–	07 भूकंप	जून	–	05 भूकंप	अक्टूबर	–	09 भूकंप.
मार्च	–	06 भूकंप	जुलाई	–	08 भूकंप	नवंबर	–	06 भूकंप.
अप्रैल	–	05 भूकंप	अगस्त	–	07 भूकंप.	दिसंबर	–	04 भूकंप.

किस दौर में कितने लोग मारे गए

☞ 1900 से पहले तुर्की में भूकंपों की वजह से 6 लाख से ज्यादा मौतें हुई थीं।

☞ 1900 से 1999 तक करीब 70 हजार मौतें।

☞ 2000 से अब तक करीब 1000 मौतें।

आवश्यक सामग्री पहुंचा रही है। भारतीय सेना भी घायलों को लगातार चिकित्सा सुविधाएं मुहैया करवा रही हैं। तुर्किए के लोगों में खौफ के बीच भारतीय मददगार की भूमिका निभा रहे हैं। तुर्किए के राजदूत फिरत सुनेल ने ट्विटर पर अपने पोस्ट में लिखा- 'THANK YOU INDIA!, हर टेंट, हर ब्लैंकेट, हर स्लीपिंग बैग के लिए जो भूकंप प्रभावित लोगों के लिए काफी आवश्यक है।' उन्होंने अपने पोस्ट में #Vasudhaiva Kutumbakam भी लिखा है। 'ऑपरेशन दोस्त' के 7वें फेज के तहत 23 टन से अधिक राहत सामग्री के साथ विमान भूकंप प्रभावित सीरिया पहुंचा। इसे दमिश्क हवाई अड्डे पर स्थानीय प्रशासन और पर्यावरण उप मंत्री मुताज डौजी ने ग्रहण किया। इससे पहले राजदूत फिरात सुनेल ने ट्विटर पर भारतीय नागरिकों के एक ग्रुप को शुक्रिया कहा था, जिन्होंने भूकंप पीड़ितों के लिए 100 कंबल दान किए। उन्होंने एक लेटर की तस्वीर सोशल मीडिया पर शेयर की थी।

गौरतलब है कि आंकड़ों को फिलहाल छोड़ दें तो तुर्की और सीरिया में भूकंप से कई लोगों के मरने की पुष्टि हो चुकी है लेकिन अब भी हजारों लोग लापता हैं। ये लोग वे हैं जो मलबे के नीचे दबे हुए हैं। इन्हें बचाने के लिए बचाव दल दिन रात काम कर रहे हैं। अधिकारियों के बयान आ रहे हैं कि वे वक्त के खिलाफ काम कर रहे हैं क्योंकि हर गुजरते मिनट के साथ मलबे के नीचे दबे लोगों के जिंदा मिलने की संभावनाएं घटती जा रही हैं। आखिर कब तक लोगों के जिंदा होने की उम्मीद में तलाश जारी रखी जानी चाहिए? विशेषज्ञ कहते हैं कि लोग हफ्ते भर तक मलबे के नीचे जिंदा रह सकते हैं। हालांकि यह निर्भर करता है कि वे किन हालात में फंसे हुए हैं, उन्हें गिरने की वजह से कितनी चोट लगी है और मौसम कैसा है? लोगों को जल्द से जल्द निकाला जा सके इसलिए तुर्की और सीरिया में तो स्थानीय लोगों के अलावा विदेशों से भी बचाव कर्मियों के दल पहुंचे हुए हैं। इसके अलावा लापता लोगों के रिश्तेदार भी जीतोड़ मेहनत कर मलबा हटा रहे हैं कि जिंदा लोगों तक पहुंच सकें। विशेषज्ञ कहते हैं कि जो लोग मलबे से जिंदा बचाए जाते हैं, उनमें से ज्यादातर भूकंप के 24 घंटे के भीतर मिल जाते हैं। उसके बाद हर दिन के साथ लोगों के जिंदा मिलने की संभावनाएं भी लगातार घटती जाती हैं। इसकी मुख्य वजह चोटें होती हैं। गिरने से लोगों को गंभीर चोटें लगी होती हैं और भले ही एकदम उनकी जान नहीं जाती लेकिन समय पर इलाज ना मिलने के कारण और कई बार बहुत मलबे के नीचे दबे हुए ही बहुत ज्यादा खून बह जाने के कारण उनकी जान चली जाती है। एक अन्य बात जो लोगों की जिंदगी और

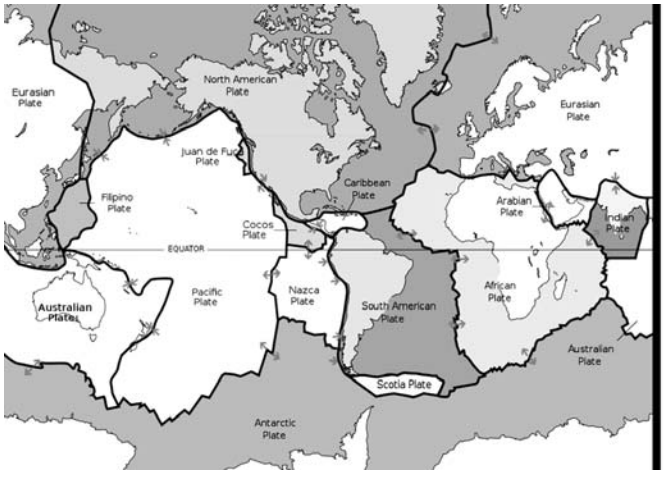

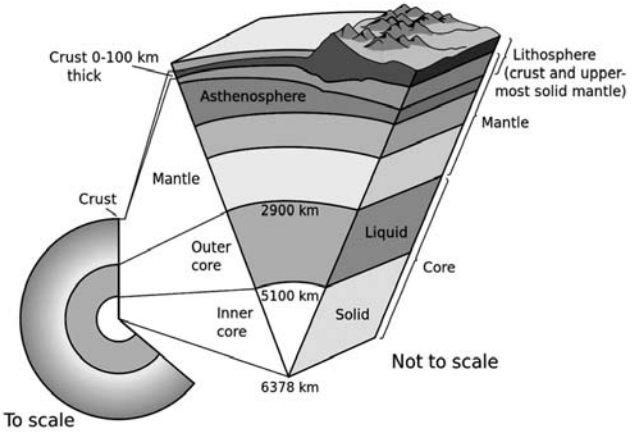

7 रिक्टर के ऊपर कब और कितने भूकंप आए और कितने लोग मारे गए ?

☞ **7.8 तीव्रता :-** तुर्की में आज आए भूकंप की बराबर तीव्रात का भूकंप इससे पहले 1939 में आया था। उसमें 32,700 से ज्यादा लोग मारे गए थे।

☞ **7.6 तीव्रता :-** 17 अगस्त 1999 में तुर्की के इजमित में भूकंप आया। इसमें 17 हजार से ज्यादा लोग मारे गए थे। उससे पहले 23 जुलाई 1784 को एरजिनकान में इसी पैमाने का भूकंप आया था, जिसमें 5 से 10 हजार लोगों के मारे जाने का अनुमान है।

☞ **7.5 तीव्रता :-** इस तीव्रता के तुर्की में अब तक छह भूकंप आए हैं। 13 दिसंबर 115 सीई में 7.5 तीव्रता का भूकंप आया था, जिसमें ढाई लाख से ज्यादा लोग मारे गए थे. 23 फरवरी 1653 को आए भूकंप में 2500 लोग मारे गए। 7 मई 1930 को आए भूकंप में 2500 से ज्यादा लोगों की मौत हुई थी. 26 नवंबर 1943 को आए भूकंप में करीब 5 हजार लोग मारे गए थे। 1 फरवरी 1944 में फिर इसी तीव्रता का भूकंप आया, चार हजार लोग मारे गए। 24 नवंबर 1976 को आए भूकंप में चार हजार लोग मारे गए।

☞ **7.4 तीव्रता :-** इस तीव्रता का भूकंप एक ही बार आया है। ये बात है 2 जुलाई 1840 की है। इस भूकंप में 10 हजार लोग मारे गए थे।

☞ **7.3 तीव्रता :-** 3 अप्रैल 1881 में आए भूकंप से 7866 लोगों की मौत हुई. 10 अक्टूबर 1883 को आए भूकंप से 120 लोग मारे गए. 9 अगस्त 1953 को आए भूकंप से 216 लोग मारे गए।

☞ **7.2 तीव्रता :-** 10 सितंबर 1509 में आए भूकंप से 10 हजार लोग मारे गए. 3 अप्रैल 1872 में 1800 लोग मारे गए. 18 मार्च 1953 को 265 लोग, 12 नवंबर 1999 में 894 लोग, 28 मार्च 1970 को 1086 लोग और 23 अक्टूबर 2011 को 604 लोग मारे गए।

☞ **7.1 तीव्रता :-** 22 मई 1766 को 4 हजार लोग मारे गए. 20 सितंबर 1899 को 1470 लोग मारे गए। 25 अप्रैल 1957 को 67 लोग और 26 मई 1957 को 52 लोग मारे गए।

☞ **7.0 तीव्रता :-** 13 जुलाई 1688 को 10 हजार लोग मारे गए. 10 जुलाई 1894 को 1300 लोग मारे गए। 6 अक्टूबर 1964 को 23 लोग मारे गए। 20 दिसंबर 1942 को तीन हजार लोग मारे गए। 30 अक्टूबर 2020 में 117 लोग मारे गए।

मौत के बीच फर्क तय करती है, वह है हवा और पानी की उपलब्धता। अगर लोग गहरे कहीं दब गए हैं जहां हवा समुचित उपलब्ध नहीं है तो सांस घुटने से लोगों की जान चली जाती है। पानी ना मिल पाने से भी लोगों की जान जा सकती है। इसके अलावा मौसम भी बहुत हद तक लोगों के बचे रहने के लिए जिम्मेदार हो सकता है। सीरिया और तुर्की में राहत और बचाव कार्यों में मौमस बड़ी बाधा बना है। वहां इस वक्त भयानक सर्दी पड़ रही है। जिस रात भूकंप आया, उस रात भी कई जगह बर्फ गिरी थी और तापमान जीरो डिग्री से नीचे है। आमतौर पर तो पांचवें से लेकर सातवें दिन के बाद मलबे के नीचे से किसी का जिंदा मिलना दुर्लभ ही होता है। इसलिए अधिकतर राहत-बचाव दल उस वक्त तक लोगों की तलाश बंद कर देते हैं। लेकिन ऐसी बहुत सी कहानियां हैं, जिनमें लोग सात दिन के बाद भी जिंदा मिले। दुर्भाग्य से ये बहुत ही दुर्लभ और कभी-कभार सुनाई देने वाली कहानियां हैं।" लोगों की बचने की संभावना में सबसे बड़ा रोड़ा पत्थरों या कंक्रीट के नीचे कुचले जाने से लगीं चोटें और अंगों का कट जाना होता है। वह कहते हैं, पहला घंटा गोल्डन ऑवर होता है। अगर आप उन्हें पहले घंटे में बाहर नहीं निकालते तो उनके बचने की संभावना बहुत कम होती है।

सवाल है कि आखिर क्यों आता है भूकंप? तो बता दें कि धरती के अंदर सात टेक्टोनिक प्लेट्स हैं। ये प्लेट्स लगातार घूमती रहती हैं। जब ये प्लेट आपस में टकराती हैं। रगड़ती हैं। एकदूसरे के ऊपर चढ़ती या उनसे दूर जाती हैं, तब जमीन हिलने लगती है। इसे ही भूकंप कहते हैं। हमारी पृथ्वी

प्रमुख तौर पर चार परतों से बनी है। यानि इनर कोर, आउटर कोर, मैंटल और क्रस्ट। क्रस्ट सबसे ऊपरी परत होती है। इसके बाद होता है मैंटल। ये दोनों मिलकर बनाते हैं लीथोस्फेयर। लीथोस्फेयर की मोटाई 50 किलोमीटर है, जो अलग-अलग परतों वाली प्लेटों से मिलकर बनी है। जिसे टेक्टोनिक प्लेट्स कहते हैं।

भूकंपों के चार प्रकार होते हैं :-

1. **इंड्यूस्ड अर्थक्वेक :-** इंड्यूस्ड अर्थक्वेक यानि ऐसे भूकंप जो इंसानी गतिविधियों की वजह से पैदा होते हैं जैसे सुरंगों को खोदना, किसी जलस्रोत को भरना या फिर किसी तरह के बड़े भौगोलिक या जियोथर्मल प्रोजेक्ट्स को बनाना। बांधों के निर्माण की वजह से भी भूकंप आते हैं।

2. वॉल्कैनिक अर्थक्वेक :- वॉल्कैनिक अर्थक्वेक यानि वो भूकंप जो किसी ज्वालामुखी के फटने से पहले, फटते समय या फटने के बाद आते हैं। ये भूकंप गर्म लावा के निकलने और सतह के नीचे उनके बहने की वजह से आते हैं।

3. कोलैप्स अर्थक्वेक :- कोलैप्स अर्थक्वेक यानि छोटे भूकंप के झटके, जो जमीन के अंदर मौजूद गुफाओं और सुरंगों के टूटने से बनते हैं। जमीन के अंदर होने वाले छोटे विस्फोटों की वजह से भी ये आते हैं।

4. एक्सप्लोसन अर्थक्वेक :- इस तरह के भूकंप के झटके किसी

परमाणु विस्फोट या रसायनिक विस्फोट की वजह से पैदा होते हैं।

भूकंप को नापने के लिए रिक्टर पैमाने का इस्तेमाल करते हैं. जिसे रिक्टर मैग्नीट्यूड स्केल कहते हैं। रिक्टर मैग्नीट्यूड स्केल 1 से 9 तक होती है। भूकंप की तीव्रता को उसके केंद्र यानी एपीसेंटर से नापा जाता है यानि उस केंद्र से निकलने वाली ऊर्जा को इसी स्केल पर मापा जाता है। 1 यानि कम तीव्रता की ऊर्जा निकल रही है। 9 यानि सबसे ज्यादा, बेहद भयावह और तबाही वाली लहर। ये दूर जाते-जाते कमजोर होती जाती हैं। अगर रिक्टर पैमाने पर तीव्रता 7 दिखती है तो उसके आसपास के 40 किलोमीटर के दायरे में तेज झटका होता है।

बताते चले कि वैज्ञानिकों को मानव इतिहास के अब तक के सबसे बड़े भूकंप के बारे में पता चला है। इस भयानक भूकंप की तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 9.5 थी। इस भूकंप से 8000 किलोमीटर तक सुनामी आई थी। उस समय धरती पर रह रहे इंसानों को 1000 साल तक आसपास के समुद्र तटों को छोड़ना पड़ा था। यह भूकंप 3800 साल पहले आया था। जहां ये आया था, उसे अब उत्तरी चिली कहा जाता है। एक टेक्टोनिक प्लेट के टूटने से इस इलाके की तटरेखा ऊपर उठ गई थी। भूकंप की वजह से सुनामी की 66 फीट लंबी लहरें उठी थीं। वही अब तक, रिकॉर्ड किया गया सबसे बड़ा भूकंप 1960 में आया वाल्डिविया भूकंप था। यह 9.4 से 9.6 के बीच की तीव्रता का था। इसने दक्षिणी चिली को हिलाकर रख दिया था। इस भूकंप में 6,000 लोग मारे गए थे। इसकी वजह से प्रशांत महासागर में बार-बार सुनामी आई। वाल्डिविया भूकंप जिस टेक्टोनिक प्लेट के टूटने की वजह से आया, उसकी लंबाई 800 किमी थी।

अब तुर्की में आये भूकंप की भयावहता देखने को बनती है। असल में तुर्की चार टेक्टोनिक प्लेटों के जंक्शन पर बसा हुआ है। इसलिए किसी भी प्लेट में जरा सी हलचल पूरे इलाके को हिला देता है। तुर्की का ज्यादातर हिस्सा एनाटोलियन प्लेट पर है। एनाटोलियन का मतलब है छोटा एशिया। इस प्लेट के पूर्व में ईस्ट एनाटोलियन फॉल्ट है। बाई तरफ ट्रांसफॉर्म फॉल्ट है, जो अरेबियन प्लेट के साथ जुड़ता है। दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम में अफ्रीकन प्लेट है, जबकि उत्तर दिशा की तरफ यूरेशियन प्लेट है जो उत्तरी एनाटोलियन फॉल्ट जोन से जुड़ा है।

तुर्की के नीचे मौजूद एनाटोलियन टेक्टोनिक प्लेट घड़ी के विपरीत दिशा में घूम रहा है, यानी एंटीक्लॉकवाइज। साथ ही इसे अरेबियन प्लेट धक्का दे रही है। अब ये घूमती हुई एनाटोलियन प्लेट को जब अरेबियन प्लेट धक्का देती है, तब यह यूरेशियन प्लेट से टकराती है। तब भूकंप के तगड़े झटके लगते हैं। एक थ्योरी ये भी है कि एनाटोलियन टेक्टोनिक प्लेट धरती के क्रस्ट का वह तैरता हुआ बड़ा हिस्सा है, जो तीन प्लेटों के बीच समुद्र में तैर रहा है। उत्तरी एनाटोलियन प्लेट की स्टडी के बाद पता चला है कि वह एनाटोलिया यूरेशियन प्लेट

से अलग हो चुकी है। अब इसे अरेबियन प्लेट दबा रहा है, जबकि यूरेशियन प्लेट इस दबाव को रोक रही है। अफ्रीकन प्लेट लगातार एनाटोलियन प्लेट के नीचे धंस रही है। ये प्राकृतिक घटना साइप्रस के नीचे हो रहा है।

सनद् रहे कि तुर्की और सीरिया में 6 फरवरी को आए विनाशकारी भूकंप से मरने वालों की संख्या 34 हजार के पार चली गई। इस बीच भारत तुर्की की मदद के लिए ऑपरेशन दोस्त चला रहा है और तुर्की इसके लिए उसको धन्यवाद कह रहा है। 1993 के बाद आए सबसे भयानक भूकंप में तुर्की में अब तक 29,695 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि सीरिया में इस आपदा में 4300 लोग मारे गए हैं। तुर्की में भूकंप के बाद से ही दुनिया के तमाम देश मदद के लिए आगे आए हैं। भारत ने भूकंप के अगले दिन ही तुर्की में राहत और बचाव कार्य के लिए राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) की दो टीमों को खोज और बचाव कार्य के लिए भेजा था। इसमें विशेष रूप से प्रशिक्षित डॉग स्क्वायड और सभी आवश्यक उपकरण शामिल थे। तुर्की में भारतीय दल के साथ डॉक्टर और पैरामेडिक्स भी मौजूद हैं। भारतीय टीमें लगातार सर्च और रेस्क्यू ऑपरेशन के साथ-साथ मेडिकल सुविधाएं भी दे रही हैं। भारत ने तुर्की में इस खोज और राहत अभियान का नाम ऑपरेशन दोस्त दिया है। 10 फरवरी को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक ट्वीट में कहा था, 'हमारी टीमें ऑपरेशन दोस्त के एक हिस्से के रूप में दिन-रात काम कर रही हैं। वे अधिक से अधिक लोगों के जीवन और

संपत्ति को बचाने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ देना जारी रखेंगी। इस संकटपूर्ण घड़ी में भारत तुर्की के लोगों के साथ मजबूती से खड़ा है।' विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने 12 फरवरी को ट्वीट कर जानकारी दी कि ऑपरेशन दोस्त के तहत राहत सामग्री लेकर सातवीं उड़ान तुर्की पहुंची। तुर्की के अलावा सीरिया के भी भूकंपग्रस्त इलाकों में ऑपरेशन दोस्त चलाया जा रहा है। सीरिया में भारत ने राहत सामग्री की एक और खेप भेजी है। जिनमें जनरेटर, सौर लैम्प, दवाएं और अन्य राहत सामग्री शामिल हैं। वही भारत की ओर से मदद के लिए तुर्की ने भारत को 'दोस्त' कहा और भूकंप से बचे लोगों के लिए आपातकालीन किट भेजने के लिए देश को धन्यवाद दिया। भारत में तुर्की के राजदूत फिरात सुनेल ने सबसे घातक आपदाओं में से एक में बचे लोगों के लिए आपातकालीन

रेचेप तैय्यप अर्दोआन

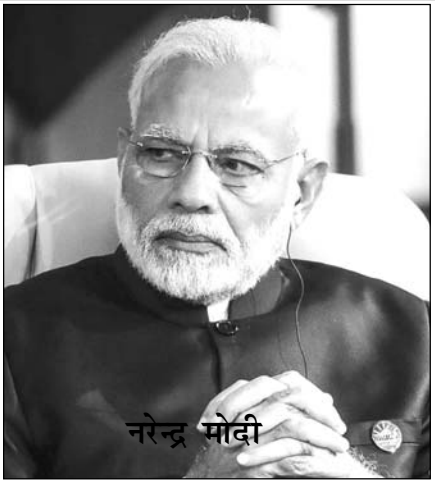
नरेन्द्र मोदी

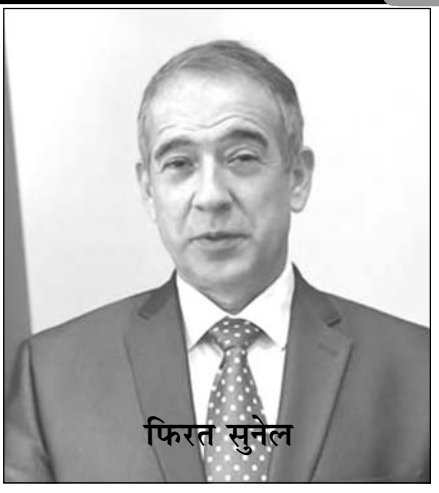
फिरत सुनेल

किट भेजने के लिए भारत को धन्यवाद दिया। राजदूत फिरात सुनेल ने भारत सरकार और लोगों का धन्यवाद देते हुए ट्वीट किया, 'धन्यवाद भारत! हर एक टेंट, प्रत्येक कंबल या स्लीपिंग बैग भूकंप से बचे लाखों लोगों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।' दिल्ली में तुर्की के दूतावास के आधिकारिक ट्विटर हैंडल ने भी मदद के लिए भारत को धन्यवाद दिया। दूतावास ने ट्वीट किया 'धन्यवाद दोस्त'।

बताते चले कि तुर्की को भारत से सहायता ऐसे समय में मिली है जब संबंध अभी भी तनावपूर्ण हैं-विशेष रूप से कश्मीर पर तुर्की के बयानों के बाद। 2019 में तुर्की के राष्ट्रपति रेचप तैयप एर्दोवान ने संयुक्त राष्ट्र महासभा को संबोधित करते हुए जम्मू-कश्मीर के विशेष राज्य का दर्जा खत्म करने की आलोचना की थी। फिर भी यह तथ्य कि सरकार ने राजनीतिक विचारों को अलग रखा और सहायता भेजी, ठीक वैसे ही जैसे तुर्की ने कोविड के दौरान भारत को राहत भेजने में किया था। जानकारों का मानना है कि विशेष रूप से भारत की जी-20 अध्यक्षता वाले वर्ष में भारत की सहायता ने विकासशील दुनिया के नेता के रूप में अपनी छवि को चमकाया है। एर्दोवान ने अपने आखिरी भारत दौरे (2017) में कश्मीर को लेकर बयान दिया था, जिसपर काफी विवाद हुआ था। साल 2019 में नरेंद्र मोदी तुर्की जाने वाले थे, लेकिन एर्दोवान के यूएन में कश्मीर को लेकर दिए बयान के कारण वह दौरा टल गया था। अब ऐसे हालात में भारत सरकार के अलावा कई संगठन और देश के आम नागरिक भी भूकंप पीड़ितों के लिए जरूरत का सामान दान कर रहे हैं। इसी कड़ी में भारतीयों द्वारा दान की गई सामग्री लेकर तुर्की एयरलाइन्स की एक फ्लाइट ने दिल्ली से उड़ान भरी। तुर्की के दूतावास के मुताबिक तुर्की एयरलाइंस भूकंप प्रभावित क्षेत्रों में रोज इस तरह की मदद मुफ्त में पहुंचा रही है। देश के कई एनजीओ, संगठन और आम नागरिक मदद के लिए आगे आए हैं और राहत सामग्री जुटाकर तुर्की के दूतावास तक पहुंचा रहे हैं। पिछले कुछ दिनों में भारत बचाव कार्य में मदद के लिए पांच सी-17 ग्लोबमास्टर सैन्य परिवहन विमान से तुर्की को दवाएं, एक सचल अस्पताल और विशेष खोजी और बचाव टीम भेज चुका है। भारत ने सीरिया को भी भारतीय वायुसेना के सी-130 जे विमान से राहत सामग्री भेजी है।

बहरहाल, तुर्किए में भूकंप से 3 दिन पहले भविष्यवाणी करने वाले फ्रैंक हुगरबीट्स ने अब भारत, पाकिस्तान और अफगानिस्तान में भूकंप आने की भविष्यवाणी की है। तुर्किए और सीरिया में भूकंप से बड़ी संख्या में इमारतें तबाह हुई हैं और जन-धन की काफी हानि हुई है। अब तक 37 हजार से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है। संभावित भूकंप की सूची में हुगरबीट्स ने भारत, पाकिस्तान और अफगानिस्तान को रखा है। फ्रैंक का मामना है कि एशियाई देशों को तुर्की की तरह भूकंप या प्राकृतिक आपदा का सामना करना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि अगला भूकंप अफगानिस्तान से शुरू होगा। पाक और भारत को पार करने के बाद हिंद महासागर में खत्म होगा। फ्रैंक का कहना है कि उनकी संस्था ने पूर्व में आए भीषण भूकंपों के बारे में विस्तार से शोध किया है। उनकी संस्था खासतौर से ग्रहों की स्थिति देखकर ही भूकंप का अनुमान लगाती है। नीदरलैंड स्थित सोलर सिस्टम ज्योमेट्री सर्वे के लिए काम करने वाले फ्रैंक हुगरबीट्स डच शोधकर्ता हैं। यह एक शोध संस्थान है, जो भूकंप का अनुमान लगाने के लिए आकाशीय पिंडों की निगरानी करता है। भविष्यवाणी को लेकर फ्रैंक का मानना है कि भूकंप पूर्वानुमान को लेकर मैंने तीन दिन पहले एक ट्वीट किया था। उन्होंने कहा कि मैंने ऐसा इसलिए किया था क्योंकि मैंने वहां विस्तार से रिसर्च की है। रिसर्च के आधार पर ही मैंने कहा था कि वहां भूकंप आ सकता है। हालांकि मुझे भी इस बात का अनुमान नहीं था कि 3 दिन में ही इतना शक्तिशाली भूकंप आ जाएगा।

फ्रैंक हुगरबीट्स

कानूनी सलाह

शिवानंद गिरि
(अधिवक्ता)

Ph.- 9308454485
7004408851

E-mail :-
shivanandgiri5@gmail.com

✯ विधि व्यवसाय करने का अधिकार किसको है?

अधिवक्ता अधिनियम 1961 की धारा 29 में यह प्रावधान किया गया है की विधि व्यवसाय करने के लिए हकदार व्यक्तियों का एक ही वर्ग होगा अर्थात अधिवक्ता इससे स्पष्ट है की विधि व्यवसाय करने का हक केवल अधिवक्ताओं, एडवोकेट्स को ही है, अन्य किसी को नहीं अधिवक्ताओं का विधि व्यवसाय करने का अधिकार केवल मात्र एक सामान्य विधिक अधिकार है, मूल अधिकार नहीं। विधि व्यवसाय के लिए दो बातें आवश्यक हैं-पहला विधि स्नातक होना तथा दूसरा अधिवक्ताओं की नामावली में नाम दर्ज होना।

अधिनियम की धारा 30 में यह उपबंध किया गया है कि इस अधिनियम के अन्य प्रावधानों के अधीन रहते हुए ऐसा व्यक्ति जिसका नाम अधिवक्ता नामावली में दर्ज है वह उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालय एवं अन्य अधीनस्थ न्यायालयों में तथा किसी न्यायाधिकरण, ट्रिब्यूनल अथवा साक्षी लेने हेतु विधिक रुप से प्राधिकृत व्यक्ति के समक्ष या ऐसे किसी व्यक्ति अथवा प्राधिकारी के समक्ष जहां कोई अधिवक्ता तत्समय प्रवृत किसी विधि के अधीन विधि व्यवसाय करने के लिए अधिकृत हो में विधि व्यवसाय करने का हकदार है। उच्चतम न्यायालय को यह अधिकार होता है कि वह अपने समक्ष वकालत करने तथा कार्य करने हेतु नियम बना सकता है तथा वह वकालत करने की शर्तें भी तय कर सकता है (बलराज सिंह मलिक बनाम सुप्रीम कोर्ट ऑफ इडिया ए आई आर 2012 दिल्ली 79)

अधिनियम की धारा 33 में प्रावधान किया गया है कि ऐसा कोई भी व्यक्ति किसी न्यायालय में अधिवक्ता के रूप में विधि व्यवसाय करने का हकदार नहीं होगा जिसका नाम इस अधिनियम के अंतर्गत अधिवक्ता नामावली में दर्ज ना किया गया हो। अधिनियम की धारा 45 में प्रावधान किया गया है कि कोई भी ऐसा व्यक्ति जो इस अधिनियम के अंतर्गत है, विधि व्यवसाय करने का हकदार नहीं है। किसी न्यायालय अथवा प्राधि कारी के समक्ष विधि व्यवसाय नहीं कर सकता है। यदि कोई व्यक्ति ऐसा विधि व्यवसाय करता है तो उसका यह कृत्य अवैधानिक माना जाएगा और उसे 6 माह तक की अवधि के कारावास से दंडित किया जा सकेगा। केस- विधि व्यवसाय के संबंध में (नीलगिरी बार एसोसिएशन बनाम टी के महालिंगम 1998 क्रिमिनल लॉ रिवीजन 247 एस.सी) का प्रकरण है। इसमें प्रार्थी के पास ना तो विधि व्यवसाय की उपाधि थी और ना ही उसका नाम अधिवक्ता के नामावली में अंकित था, फिर भी वह लगातार 8 वर्षों तक न्यायालयों में वकालत करता रहा। जब उसे अभियोजित किया गया तो उसने अपने अपराध को स्वीकार कर लिया।

विचारण :- न्यायालय ने उसे दोषी सिद्ध ठहराते हुए परिवीक्षा (प्रोबेशन) का लाभ दिया। उच्च न्यायालय द्वारा भी परिवीक्षा के आदेश को यथावत रखा गया लेकिन उच्चतम न्यायालय ने प्रत्याशी को 6 माह के कठोर कारावास एवं 5,000 रूपये के जुर्माने से दंडित किया। जुर्माना जमा नहीं कराए जाने पर 3 माह के अतिरिक्त कारावास का आदेश दिया गया।

माननीय न्यायालय ने कहा कि विधि व्यवसाय एक पवित्र एवं आदर्श व्यवसाय है। अधिवक्ताओं का समाज में विशिष्ट स्थान भी है, जनसाधारण में अधिवक्ताओं को आदर की दृष्टि से देखा जाता है ऐसी स्थिति में यदि कोई व्यक्ति इस व्यवसाय की प्रतिष्ठा को आघात पहुंचाने वाला कोई कार्य करता है तो ऐसा व्यक्ति किसी भी प्रकार की सहानुभूति का पात्र नहीं रह जाता है ऐसे व्यक्तियों के लिए कठोर दंड ही उचित दंड है। ऐसे व्यक्ति अधिवक्ता की नामावली में बतौर अधिवक्ता नाम दर्ज करवा सकते हैं, जो विधि स्नातक हैं तथा किसी विश्वविद्यालय में विधि अधिकारी के रूप में कार्यरत हैं (लक्ष्मी नारायण बनाम बार काउंसिल ऑफ इंडिया ए आई आर 1999 राजस्थान 325)।

इस प्रकार का प्रकरण (परमानंद शर्मा बनाम बार कौंसिल ऑफ राजस्थान एआईआर 1999 राजस्थान 171) का है, जिसमें ऐसे व्यक्ति को विधिज्ञ परिषद की नामावली में ऐसे व्यक्ति को बार बेंच संबंध एवं मूट कोर्ट में प्रविष्ट कराने का हकदार माना गया है जो केंद्रीय या राज्य सरकार के अधीन विधि अधिकारी के रूप में कार्यरत रहा हो। इस प्रकार स्पष्ट है कि विधि व्यवसाय करने के लिए उसका विधि स्नातक होने के साथ-साथ उसका अधिवक्ताओं की नामावली में नाम अधिवक्ता के रूप में दर्ज होना चाहिए। इसके अलावा ऐसा व्यक्ति जो किसी अन्य व्यवसाय, व्यापार या कारोबार में लिप्त या संलग्न है वह विधि व्यवसाय नहीं कर सकता है। केस- इस संबंध में एक महत्वपूर्ण प्रकरण डॉक्टर हनीराज एल चुलानी बनाम बार काउंसिल ऑफ महाराष्ट्र एआईआर 1996 एस.सी 2076 का है इस मामले में अपील कर्ता एक चिकित्सक था और वह अपना नाम अधिवक्ताओं की नामावली में प्रविष्ट कराना चाहता था, इस मामले में उच्चतम न्यायालय द्वारा यह कहा गया है कि विधि व्यवसाय एक पूर्णकालिक व्यवसाय है अधिवक्ताओं को अपने व्यवसाय के प्रति समर्पित होकर कार्य करना होता है उन्हें अपने पक्षकारों को पूरा समय भी देना होता है अत: यह आवश्यक है कि कोई अधिवक्ता विधि व्यवसाय के अलावा अन्य कोई व्यवसाय करता है तो वह अपने पक्षकारों के साथ न्याय नहीं कर पाएगा। ऐसा ही एक अन्य प्रकरण है जिसमें पक्षकार जो एसटीडी बूथ चला रहा है को तब तक विधि व्यवसाय करने का हकदार नहीं माना गया जब तक वह एसटीडी बूथ को छोड़ नहीं देता डॉक्टर साई बाबा बनाम बार काउंसिल ऑफ इंडिया ए आई आर 2003 एस.सी 2502

☞ **वकालतनामा**- न्यायालय में पैरवी करने के लिए वकालतनामा को आवश्यक माना गया है। वकालतनामा के अभाव में अधिवक्ता केवल न्यायालय की अनुमति से ही पैरवी कर सकता है (को-ऑपरेटिव एग्रीकल्चरल बैंक लिमिटेड बनाम स्टेट ऑफ कर्नाटक एआईआर 2003 कर्नाटक 30)।

☞ **विधि व्यवसाय की विशेषताएं**-यह एक स्वतंत्र एवं पवित्र व्यवसाय है। इसका विस्तार एवं कार्यक्षेत्र अत्यंत व्यापक है। जो व्यक्ति विधि व्यवसाय करता है वह अधिवक्ता कहलाता है। इस व्यवसाय का मुख्य उद्देश्य सेवा भावना है, इस व्यवसाय को करने वाले व्यक्तियों के समूह को बार कहा जाता है। बार एवं बेंच के बीच मधुर संबंधों की परिकल्पना की जाती है। इसमें दलाली अथवा भ्रष्टाचार के लिए कोई स्थान नहीं है। विधि व्यवसाय न्यायालय के अधिकारी माने जाते हैं।

निष्कर्ष के तौर पर यह कह सकते हैं कि विधि व्यवसाय करने का अधिकार केवल अधिवक्ता वर्ग को ही है, अन्य किसी वर्ग को नहीं। इसके लिए अधिवक्ता ऐसा हो, जिसके पास विधि स्नातक की उपाधि हो एवं जिसका नाम अधिवक्ता की नामावली में दर्ज हो क्योंकि विधि व्यवसाय एक पवित्र एवं आदर्श व्यवसाय है।

GSTIN : 10KEPD0123PIZP

उत्तर भारत का COOKIE MAKER, सीवान में पहली बार
आपके लिए लेकर आया है
Cookie का बेहतर श्रृंखला

PRATIK ENTERPRISES

राजपुर (रघुनाथपुर) में अत्याधुनिक मशीनों द्वारा रस्क, बिस्कुट, बर्गर, मीठा ब्रेड, वंद, क्रीम रोल, पेटीज और बर्ड डे केक, पार्टी केक ग्राहकों के मनपसंद तैयार किया जाता है।

शुद्धता एवं स्वाद की 100% गारंटी

किसी भी अवसर पर
एक बार सेवा का मौका अवश्य दें।

प्रतीक फुड कंपनी

प्रतीक इंटरप्राइजेज, प्रतीक पतंजलि
राजपुर, रघुनाथपुर, सीवान (बिहार)

-: सौजन्य से :-

ब्रजेश कुमार दुबे

Mob.-9065583882, 9801380138

WESTERLIN DRUGS PVT. LTD.

(Serving nation since 1990)

WESTOCITRON
WESTOCLAV
WESTOFERON
WESTOPLEX
QNEMIC

AOJ
AZIWEST
DAULER
MUCULENT
AOJ-D
BESTARYL-M
GAS-40
MUCULENT-D

SEVIPROT
WESTOMOL
WESTO ENZYME
ZEBRIL

WESTERLIN DRUGS PVT. LTD.
Industrial area, Fatuha-803201
E-mail- westerlindrugsprivatelimited@gmail.com
Phone No.:0162-3500233/2950008